नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 192, नई दिल्ली, शनिवार 17 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र



● 03 धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

● 06 अवसरों की पहचान और सही चुनाव की कला

● 08 नवोदय प्रवेश परीक्षा 2027 की तैयारी को लेकर टीचर्स ऑफ बिहार की विशेष पहल

उत्तम नगर काली बाड़ी में मां दुर्गा की प्रतिमा: श्रद्धा, सेवा और परंपरा का संगम

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी — मां की प्रतिमा का दान, भोग और प्रसाद का निमंत्रण

निवेदक:- पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र एवम् राष्ट्रीय महासचिव टोलवा ट्रस्ट

नई दिल्ली। आप सबको बताते हुए हमें बहुत हर्ष हो रहा है कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी उत्तम नगर काली बाड़ी मंदिर में दुर्गा मां की प्रतिमा प्रधान संपादक संजय कुमार बाठला एवं चेयरमैन, टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) के द्वारा दी गई है।

यह केवल एक प्रतिमा का दान नहीं है, यह श्रद्धा की निरंतरता है। पिछले वर्ष जो संकल्प लिया गया था, इस वर्ष उसे फिर निभाया गया है।

मुख्य बिंदु — तथ्यों सहित

- **स्थान:** उत्तम नगर काली बाड़ी मंदिर, C-50, मंसा राम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
- **आयोजक:** बेंगाली एसोसिएशन, उत्तम नगर (Bengali Association Uttam Nagar)
- **प्रतिमा दाता:** संजय कुमार बाठला — प्रधान संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र, एवं चेयरमैन, टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
- **विशेष कार्यक्रम:** सप्तमी, अष्टमी, नवमी — तीनों दिन मां को भोग लगाया जाएगा
- **प्रसाद वितरण:** तीनों दिन भक्तों के लिए प्रसाद की व्यवस्था
- **निमंत्रण:** सभी भक्तगण, परिवार सहित दर्शन के लिए आमंत्रित हैं

विनम्र निवेदन:- पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

>आप सभी से नम्र निवेदन है कि आप सभी इस शुभ अवसर पर मां की प्रतिमा के दर्शन करने के लिए आएं और मां का प्रसाद ग्रहण करें।

>सप्तमी, अष्टमी, नवमी तीनों दिन मां को भोग लगाया जाएगा। आप सभी आएं और मां का प्रसाद और आशीर्वाद ग्रहण करें।

शारदीय नवरात्रों की यह परंपरा सिर्फ पूजा नहीं है, यह समाज को जोड़ने का पर्व है। उत्तम नगर की काली बाड़ी में ढाक की धुन, मां के मुखड़े की दिव्यता और भक्तों की भीड़ — यही हमारी सांस्कृतिक पहचान है।



>आइए, दर्शन करें – प्रसाद ग्रहण करें – आशीर्वाद प्राप्त करें

>उत्तम नगर काली बाड़ी मंदिर — आपका हार्दिक स्वागत है।

शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं - परिवहन विशेष समाचार पत्र

सातवीं देवी मां कालरात्रि माता — अंधकार को हरने वाली, भय को मिटाने वाली

मां की अनुपम ममता और आशीर्वाद आप पर सदा बना रहे

शारदीय नवरात्रों के सातवें दिन — सप्तमी — भक्त मां दुर्गा के सातवें स्वरूप मां कालरात्रि की आराधना करते हैं। मां का यह स्वरूप जितना भयानक प्रतीत होता है, उतना ही भक्तों के लिए करुणामयी और शुभ फल देने वाला है। इसीलिए मां को शुभंकरी भी कहा जाता है।

मां कालरात्रि का स्वरूप — तथ्य और मुख्य बिंदु

- वर्ण: मां का वर्ण गहन श्याम — अंधेरी रात जैसा, पर उनका तेज सूर्य के समान
- नेत्र: तीन नेत्र — जो भूत, भविष्य और वर्तमान का दर्शन कराते हैं
- भुजाएं: चार भुजाएं — दाहिने हाथों में अभय और वरद मुद्रा, बाएं हाथों में तलवार और खड्ग
- वाहन: गर्दभ (गधा) — मां की गति और विनम्रता का प्रतीक
- माला: गले में माला, श्वासों में अग्नि, शत्रुओं के लिए महाकाल
- निवास: माता कालरात्रि का निवास सहस्रार चक्र में माना गया है
- ग्रह: शनि ग्रह की अधिष्ठात्री देवी मां कालरात्रि हैं

मां के श्वास से अग्नि निकलती है, उनकी दृष्टि से असुर भयभीत होते हैं, पर भक्तों के लिए मां सदैव अभय दान देती हैं।

मां कालरात्रि की कथा पौराणिक कथा के अनुसार, जब शुंभ-निशुंभ और रक्तबीज जैसे असुरों ने देवताओं को त्रस्त कर दिया, तब मां पार्वती ने अपने क्रोध से मां कालरात्रि को उत्पन्न किया। रक्तबीज का रक्त धरती पर गिरते ही नया असुर उत्पन्न हो जाता था। मां कालरात्रि ने उसका रक्त पीकर उसे समाप्त किया और देवताओं को विजय दिलाई।

यही कथा बताती है कि — अंधकार कितना भी घना हो, मां के एक आशीर्वाद से वह समाप्त हो जाता है।

पूजा विधि — सप्तमी के दिन

1. स्नान और संकल्प: प्रातः स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, मां का ध्यान करें
2. कलश पूजन: मां को लाल फूल, गुड़, अक्षत और लाल चुनरी अर्पित करें
3. भोग: मां को गुड़, शहद और फल का भोग विशेष रूप से प्रिय है। सप्तमी को गुड़ का भोग लगाने से मां प्रसन्न होती हैं
4. मंत्र:

> ॐ देवी कालरात्र्यै नमः॥

> एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता। लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥

5. आरती: मां की आरती और दुर्गा सप्तशती के सातवें अध्याय का पाठ करें
6. हवन: सप्तमी को हवन कर मां का आशीर्वाद लें

मां की आराधना के लाभ

- भय, भूत-प्रेत, नकारात्मक ऊर्जा और शत्रु बाधा से मुक्ति
- ग्रह बाधाओं, विशेषकर शनि दोष से राहत
- मन में साहस, आत्मबल और संकटों से लड़ने की शक्ति
- जीवन में समृद्धि, शांति और मां का अनुपम आशीर्वाद



ट्रांसपोर्ट विशेष परिवार की ओर से शुभकामना

> "मां की अनुपम ममता और कृपा सब पर बनी रहे, यही कामना है हमारी।"

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड | परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक | टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) | ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत) के प्रमुख सांझा प्रबंधन मंडल की ओर से आप सभी को शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं।

संजय कुमार बाठला — प्रधान संपादक
पिंकी कुंडू — सह संपादक
Parivahan Vishesh Newspaper

परिवहन विशेष समाचार पत्र से जुड़े सभी पाठकों और सहयोगियों के लिए विशेष सूचना

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं की हम अपने चैनल के माध्यम से आपको 1. प्रतिदिन की देश विदेश की जानकारी 2. आपके वह आपके बच्चों के कैरियर, 3. आपके बच्चों के भविष्य से संबंधित ज्ञानवर्धक आवश्यक जानकारिया, 4. आपकी सेहत से जुड़ी सभी उपयोगी जानकारियां 5. शारीरिक बीमारियों से बचने के तरीके 6. धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान विश्व के सभी क्षेत्रों के ज्ञानदाताओं के माध्यम से प्रदान करने का प्रयास करेंगे। हम अपने चैनल द्वारा प्रतिदिन एक घंटे के कार्यक्रम "जनता की पुकार" में आपकी आवाज को विश्व के सामने प्रस्तुत कर सरकार और सरकारी विभागों के साथ माननीय न्यायालयों से उसके उचित हल और उसके प्रति पालिसी लागू करवाने में मध्यांतर का माध्यम बनेंगे। आप सभी से अनुरोध आप के अपने शुरू होने वाले चैनल के माध्यम से अपनी शिकायतें, परेशानियां और अनुभव अन्य सभी से साझा करने के लिए तैयार एवं तत्पर रहे। आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

संजय बाठला
मुख्य संपादक

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

साइबर सुरक्षा और ज्ञान: डिजिटल युग में जनहित की सबसे बड़ी रक्षा

लेखक: पिंकी कुंडू, सामाजिक परामर्शदाता - जनहित – जनकल्याण – जनसूचना हेतु प्रस्तुत

नई दिल्ली। आज हमारा जीवन मोबाइल, इंटरनेट, UPI, ऑनलाइन बैंकिंग और सोशल मीडिया से जुड़ गया है। इसी के साथ साइबर अपराध भी तेजी से बढ़ा है। साइबर सुरक्षा अब केवल तकनीक का विषय नहीं है, यह ज्ञान, जागरूकता और व्यवहार का विषय है। इसी को ध्यान में रखते हुए यह महत्वपूर्ण विश्लेषण रिपोर्ट प्रस्तुत की जा रही है — ताकि आम नागरिक, महिला, बुजुर्ग, विद्यार्थी और व्यापारी — सभी सुरक्षित रहें।

मुख्य बिंदु — तथ्यों सहित

- साइबर अपराध क्या है? कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल के माध्यम से की जाने वाली धोखाधड़ी, डेटा चोरी, ठगी, हैकिंग, फिशिंग और पहचान की चोरी
- भारत में हेल्पलाइन: साइबर ठगी पर राष्ट्रीय हेल्पलाइन 1930 पर तुरंत शिकायत करें, और www.cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें
- OTP ही आपकी कुंजी है: बैंक, पुलिस, कोई भी अधिकारी OTP नहीं मांगता — OTP मांगने वाला ठग है
- सबसे बड़ा खतरा — फिशिंग लिंक: SMS, WhatsApp, ईमेल में आए अनजान लिंक पर क्लिक न करें, KYC अपडेट, लॉटरी, बिजली बिल, पार्सल जैसे झूठे संदेश ठगी का जाल हैं
- पासवर्ड सुरक्षा: एक ही पासवर्ड हर जगह न रखें, Strong Password + 2FA (दो-स्तरीय प्रमाणीकरण) अवश्य चालू करें
- बच्चों की सुरक्षा: बच्चे ऑनलाइन गेम, वीडियो और अनजान दोस्तों के संपर्क में हैं — माता-पिता निगरानी रखें, स्क्रीन टाइम और प्राइवेसी सेटिंग समझाएं

1. साइबर ठगी के प्रमुख तरीके — जानिए, बचिए

1. फिशिंग: नकली वेबसाइट, नकली बैंक लिंक बनाकर जानकारी चुराना
2. वॉयस फिशिंग (विशिंग): कॉल करके खुद को बैंक अधिकारी बताकर OTP मांगना
3. UPI फ्रॉड: QR कोड स्कैन कराने, पैसे भेजने के बहाने खाता खाली करना
4. सोशल मीडिया ठगी: फर्जी प्रोफाइल, नौकरी, निवेश, क्रिप्टो, ऑनलाइन शॉपिंग का लालच
5. मालवेयर: अनजान ऐप, APK फाइल से फोन हैक कर डेटा चोरी

>सिद्धांत याद रखें: लालच, डर और जल्दबाजी — ठग के तीन हथियार हैं।

2. ज्ञान ही सुरक्षा है — 10 स्वर्ण नियम

1. OTP, PIN, CVV किसी को न दें
2. अनजान लिंक, QR कोड स्कैन न करें
3. बैंकिंग ऐप और फोन नियमित अपडेट करें
4. सार्वजनिक वाई-फाई पर बैंकिंग न करें
5. सोशल मीडिया पर निजी जानकारी, लोकेशन, बच्चों की फोटो सार्वजनिक न करें
6. हर अकाउंट पर अलग मजबूत पासवर्ड + 2FA
7. संदिग्ध कॉल आने पर फोन काटकर बैंक के आधिकारिक नंबर पर संपर्क करें
8. ऑनलाइन खरीदारी केवल भरोसेमंद साइट से करें
9. बच्चों को साइबर सुरक्षा सिखाएं — अनजान व्यक्ति से बात न करने का नियम ऑनलाइन भी लागू है
10. ठगी होने पर तुरंत 1930 पर कॉल करें — पहला 1 घंटा गोल्डन आवर है, पैसा वापस मिलने की संभावना सबसे अधिक रहती है



3. महिलाओं, बुजुर्गों और व्यापारियों के लिए विशेष संदेश

- महिलाओं के लिए: फोटो, वीडियो का दुरुपयोग, ब्लैकमेल, ऑनलाइन उत्पीड़न की शिकायत तुरंत करें, डरें नहीं — कानून आपके साथ है
- बुजुर्गों के लिए: पेंशन, बैंक, आधार, केवाईसी के नाम पर आने वाले कॉल से सावधान रहें, किसी अनजान व्यक्ति के कहने पर टीम व्यूअर/एनीडेस्क ऐप इंस्टॉल न करें
- व्यापारियों के लिए: ट्रांसपोर्ट, दुकान, बिजनेस खातों में UPI ट्रांजेक्शन की पुष्टि करें, स्टाफ को भी साइबर सुरक्षा का प्रशिक्षण दें

निष्कर्ष — सुरक्षित समाज की ओर

>साइबर सुरक्षा किसी एक व्यक्ति की नहीं, पूरे समाज की जिम्मेदारी है।

>ज्ञान, जागरूकता और सावधानी — यही तीनों मिलकर डिजिटल भारत को सुरक्षित बनाते हैं। पिंकी कुंडू जी की ओर से यही अपील है — जानकारी फैलाएं, दूसरों को जागरूक करें, और किसी भी ठगी का शिकार होने पर चुप न रहें, तुरंत शिकायत करें।

साइबर ठगी से बचें — जागरूक रहें, सुरक्षित रहें।

मोटापे की दवाओं की वैश्विक दौड़ में भारतीय वैज्ञानिक प्रतिभा की अग्रणी भूमिका

डॉ. विजय गर्ग

मोटापा आज दुनिया की सबसे गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्याओं में से एक बन गया है। पहले इसे मुख्य रूप से जीवनशैली और व्यक्तिगत आदतों से जोड़कर देखा जाता था, लेकिन अब इसे एक जटिल और दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्या माना जाता है। इस पर आनुवंशिक कारकों, शरीर की चयापचय प्रक्रिया, हार्मोन, खानपान, शारीरिक गतिविधि और सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। दुनिया भर में मोटापे के बढ़ते मामलों के कारण सुरक्षित, प्रभावी और किफायती उपचारों की खोज तेज हो गई है। भारत के पास वैज्ञानिक प्रतिभा, दवा निर्माण का अनुभव और अनुसंधान की बढ़ती क्षमता है। इसलिए वह इस वैश्विक दौड़ में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मोटापे के उपचार में नए युग की शुरुआत

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की प्रगति ने मोटापे के उपचार की दिशा बदल दी है। एक बड़ी उपलब्धि उन दवाओं के रूप में सामने आई है, जो भूख को नियंत्रित करने, पाचन प्रक्रिया और रक्त में शर्करा के स्तर को प्रभावित करने वाले हार्मोन पर काम करती हैं। GLP-1 प्रणाली को लक्ष्य बनाने वाली दवाओं तथा एक से अधिक चयापचय प्रक्रियाओं पर काम करने वाली नई दवाओं ने नैदानिक परीक्षणों में वजन घटाने के उल्लेखनीय परिणाम दिखाए हैं।

ये दवाएँ भूख कम करने, लंबे समय तक पेट भरा हुआ महसूस कराने और मोटापे से जुड़ी कुछ स्वास्थ्य समस्याओं में सुधार करने में मदद कर सकती हैं। हालांकि, ये सभी लोगों के लिए उपयुक्त नहीं होतीं। इनका उपयोग चिकित्सकीय जाँच और निगरानी में ही किया जाना चाहिए। इन्हें तेजी से वजन घटाने का जादुई उपाय या स्वस्थ जीवनशैली का विकल्प नहीं समझना चाहिए।

अब वैज्ञानिकों का लक्ष्य केवल वजन घटाने वाली दवा विकसित करना नहीं है। वे उपचार की दीर्घकालिक सुरक्षा बढ़ाने, मांसपेशियों को सुरक्षित रखने, दुष्प्रभाव कम करने, दवा लेने की प्रक्रिया को आसान बनाने और उपचार बंद करने के बाद दोबारा वजन बढ़ने की समस्या को रोकने के उपाय भी खोज रहे हैं।

भारत की वैज्ञानिक और औषधि निर्माण क्षमता

भारत विश्वभर में दवाओं के निर्माण के लिए जाना जाता है। यहाँ कुशल वैज्ञानिक, रसायनशास्त्री, जैव-प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ और नैदानिक अनुसंधान से जुड़े पेशेवर उपलब्ध हैं। जेनेरिक दवाओं के क्षेत्र में भारत का अनुभव जटिल उपचारों और नई दवाओं के विकास के लिए मजबूत आधार प्रदान करता है।

भारतीय वैज्ञानिक और दवा कंपनियाँ मोटापे की दवाओं के विकास के विभिन्न चरणों में योगदान दे सकती हैं। इनमें नई दवाओं की खोज, बेहतर औषधीय फॉर्मूलेशन तैयार करना, नैदानिक परीक्षण करना, उच्च गुणवत्ता वाली दवाओं का निर्माण और प्रभावी उपचारों को अधिक किफायती बनाने के उपाय खोजना शामिल है।

भारत की शक्ति केवल दवाएँ बनाने तक सीमित नहीं है। यहाँ विविध सामाजिक और स्वास्थ्य परिस्थितियों वाली विशाल आबादी है, जिसके लिए वैज्ञानिक ज्ञान को व्यावहारिक रूप देने के अनेक अवसर उपलब्ध हैं। उचित निवेश, सहयोग और नियामक समर्थन से भारत चयापचय संबंधी अनुसंधान तथा अगली पीढ़ी की दवाओं के विकास में अपनी स्थिति और मजबूत कर सकता है।

भारत को बेहतर मोटापा उपचारों की आवश्यकता क्यों है?

भारत के सामने एक विशिष्ट चुनौती है। यहाँ मोटापा और पेट के आसपास जमा अतिरिक्त चर्बी कई बार पोषण संबंधी कमियों, कम शारीरिक गतिविधि तथा मधुमेह और हृदय रोगों के बढ़ते जोखिम के साथ दिखाई देते हैं। दक्षिण एशियाई लोगों में कुछ चयापचय संबंधी समस्याएँ अपेक्षाकृत कम बॉडी मास इंडेक्स (BMI) पर भी विकसित हो सकती हैं। इसलिए कमर की माप और अन्य स्वास्थ्य संकेतकों की समय पर जाँच महत्त्वपूर्ण है।

मोटापे का प्रभावी उपचार टाइप-2 मधुमेह, उच्च रक्तचाप, फैटी लिवर और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है। हालांकि, किसी भी दवा के लाभों का आकलन उसके जोखिमों, लागत और संबंधित व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति के अनुसार उपयुक्तता के आधार पर किया जाना चाहिए।

भारत को ऐसे अनुसंधान की भी आवश्यकता है, जिसमें भारतीय आबादी को उचित प्रतिनिधित्व मिले। भारतीय प्रतिभागियों पर किए गए नैदानिक अध्ययन यह समझने में मदद कर सकते हैं कि विभिन्न लोगों में दवाओं का प्रभाव, दुष्प्रभाव और दीर्घकालिक परिणाम किस प्रकार अलग-अलग हो सकते हैं।



किफायती उपचार: नवाचार की वास्तविक कसौटी

आधुनिक मोटापा-रोधी दवाओं की सबसे बड़ी बाधाओं में से एक उनकी कीमत है। यदि कोई दवा वैज्ञानिक रूप से प्रभावी हो, लेकिन अधिकांश लोग उसे खरीदने में सक्षम न हों, तो सार्वजनिक स्वास्थ्य के स्तर पर उसका लाभ सीमित रह जाता है।

भारत का औषधि उद्योग उच्च गुणवत्ता वाले निर्माण, बेहतर फॉर्मूलेशन तथा कानूनी और नियामक शर्तों के अंतर्गत किफायती जेनेरिक या बायोसिमिलर उत्पादों के विकास के माध्यम से इस चुनौती का समाधान करने में मदद कर सकता है। ऐसे उत्पादों की उपलब्धता और मंजूरी संबंधित दवा के पेटेंट, वैज्ञानिक प्रमाणों और लागू नियमों पर निर्भर करती है।

किफायती उपचार का अर्थ गुणवत्ता से समझौता करना नहीं है। मोटापे की दवाओं के लिए कठोर परीक्षण, विश्वसनीय निर्माण और चिकित्सकीय निगरानी आवश्यक हैं। अज्ञात स्रोतों से मिलने वाली दवाएँ, नकली इंजेक्शन और बिना वैज्ञानिक प्रमाणों वाले वजन घटाने के दावे लोगों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकते हैं।

दवाओं से आगे: एक समग्र दृष्टिकोण

नई दवाएँ आशा जगाती हैं, लेकिन कोई एक दवा मोटापे की पूरी समस्या का समाधान नहीं कर सकती। संतुलित आहार, नियमित शारीरिक गतिविधि, पर्याप्त नींद, तनाव का प्रबंधन और स्वस्थ जीवन के लिए अनुकूल वातावरण मोटापे की रोकथाम तथा उपचार के महत्त्वपूर्ण हिस्से हैं।

स्कूलों में पौष्टिक भोजन और खेलकूद को बढ़ावा दिया जा सकता है। कार्यस्थलों पर शारीरिक गतिविधि और स्वस्थ खानपान की आदतों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। समुदायों में पार्कों, खेल के मैदानों और किफायती पौष्टिक भोजन तक पहुँच बढ़ाने की आवश्यकता है।

स्वास्थ्यकर्मियों को लोगों को यह समझाना चाहिए कि मोटापा केवल इच्छाशक्ति की कमी नहीं, बल्कि एक जटिल चिकित्सकीय स्थिति है। कुछ लोगों के लिए दवाएँ उपयोगी हो सकती हैं, लेकिन उनका प्रयोग योग्य चिकित्सक की सलाह, संभावित लाभों और जोखिमों के मूल्यांकन तथा नियमित निगरानी के साथ ही होना चाहिए।

अनुसंधान और जिम्मेदार नियमन की आवश्यकता

वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए भारत को जैव-चिकित्सकीय अनुसंधान, चयापचय विज्ञान, नैदानिक परीक्षणों की सुविधाओं और विश्वविद्यालयों, अस्पतालों, अनुसंधान संस्थानों तथा दवा कंपनियों के बीच सहयोग में निवेश बढ़ाना चाहिए।

नियामक संस्थाओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नई दवाएँ सुरक्षा, प्रभावशीलता, निर्माण गुणवत्ता और सही लेबलिंग के कठोर मानकों पर खरी उतरें। लोगों तक सही जानकारी पहुँचाना भी आवश्यक है, ताकि बढ़ा-चढ़ाकर किए जाने वाले विज्ञापनों और वजन घटाने वाले इंजेक्शनों को केवल सौंदर्य बढ़ाने का आसान उपाय समझने जैसी गलत धारणाओं का मुकाबला किया जा सके।

अनुसंधान में उपचार के दीर्घकालिक प्रभावों, दवा बंद करने के बाद दोबारा वजन बढ़ने, मांसपेशियों और हड्डियों के स्वास्थ्य तथा उन मरीजों की पहचान पर भी ध्यान देना चाहिए, जिन्हें इन दवाओं से सबसे अधिक लाभ मिल सकता है।

भारतीय प्रतिभा के लिए वैश्विक अवसर

मोटापे के बेहतर उपचार विकसित करने की दौड़ वैज्ञानिक चुनौती के साथ-साथ आर्थिक अवसर भी है। भारत दवा निर्माण के अपने अनुभव को मौलिक अनुसंधान, नैदानिक प्रमाणों और किफायती स्वास्थ्य सेवाओं की प्रतिबद्धता के साथ जोड़कर महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

भारत की सफलता को केवल निर्मित या निर्यात की गई दवाओं की संख्या से नहीं मापना चाहिए। इसका आकलन अनुसंधान की गुणवत्ता, उपचार की सुरक्षा, मरीजों की पहुँच और सार्वजनिक स्वास्थ्य में होने वाले सुधारों के आधार पर भी होना चाहिए।

मोटापे के उपचार का भविष्य वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, नीति-निर्माताओं, दवा कंपनियों और समाज के सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करेगा। भारत की वैज्ञानिक प्रतिभा इस वैश्विक प्रयास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखती है।

निष्कर्ष

भारत मोटापे की दवाओं की वैश्विक दौड़ में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। दवा उद्योग का अनुभव, वैज्ञानिक विशेषज्ञता और नवाचार की क्षमता प्रगति के लिए मजबूत आधार प्रदान करते हैं। अनुसंधान में निवेश, नैदानिक प्रमाणों को मजबूत करने, जिम्मेदार नियमन और प्रभावी उपचारों को अधिक किफायती बनाने के माध्यम से भारत मोटापे के उपचार की अगली पीढ़ी को दिशा दे सकता है।

वास्तविक उद्देश्य केवल लोगों का वजन घटाना नहीं होना चाहिए। इसका लक्ष्य चयापचय स्वास्थ्य में सुधार, बीमारियों की रोकथाम, लोगों के आत्मसम्मान की रक्षा और अधिक से अधिक लोगों तक बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाना होना चाहिए। जब वैज्ञानिक उत्कृष्टता के साथ किफायत और सामाजिक जिम्मेदारी जुड़ती है, तो भारत का योगदान न केवल अपने देश, बल्कि पूरी दुनिया के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार।
प्रख्यात वैज्ञानिक
गली कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

लेबल पर बड़ा दावा, अंदर 2% सच - 5 बड़े ब्रांड्स का गोलमाल उजागर, उपभोक्ता हो जाएं सावधान



The Label Man of India की पड़ताल में खुलासा – विज्ञापन में 'चीज़ी वॉव', लेबल में सिर्फ 0.05% चीज़

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र उपभोक्ता जागरूकता रिपोर्ट

आज के दौर में हर दूसरा प्रोडक्ट अपने पैकेट पर बड़ी-बड़ी तस्वीरें और लुभावने दावों के साथ बिक रहा है, लेकिन पैकेट के पीछे छोटे अक्षरों में लिखी Ingredients List कुछ और ही कहानी कहती है। सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक जागरूकता वीडियो में 5 लोकप्रिय उत्पादों की सच्चाई सामने आई है।

तथ्यों सहित विश्लेषण:

1. Ching's Dark Soy Sauce – सिर्फ 2% सोया

दावा: Rich Dark Soy Sauce

सच्चाई: Ingredients List में साफ लिखा है - Soy Sauce Powder (2%). बाकी पानी, आयोडाइज्ड नमक, चीनी, रंग (INS 150c) और प्रिजर्वेटिव। यानी सोया के नाम पर सिर्फ फ्लेवर और रंग।

2. Knorr Italian Mushroom Soup – सिर्फ 2.5% मशरूम, बाकी मैदा

दावा: Italian Mushroom Soup

सच्चाई: SOUP POWDER में पहला Ingredient ही Refined Wheat Flour (Maida) है। Dehydrated Vegetables में Mushroom flakes 2.5% और Leeks 0.4%। यानी मशरूम के नाम पर मैदा और फ्लेवर।

3. Sunfeast Cheese Wowzers – सिर्फ 0.05% चीज़

दावा: Cheesy Wow, बड़ा विज्ञापन, शाहरुख खान के साथ मार्केटिंग

सच्चाई: Ingredients में CHEESE POWDER (0.05%) - यानी 100 ग्राम बिस्किट में सिर्फ 0.05 ग्राम चीज़। बाकी मैदा, पाम ऑयल, चीनी।

4. Hershey's Special Dark – डार्क के नाम पर 51 ग्राम चीनी

दावा: Special Dark Chocolate

सच्चाई: Nutritional Information में Added Sugars 51g per 100g। यानी आधे से ज्यादा सिर्फ चीनी। डार्क चॉकलेट में कोको सॉलिड 46% से कम।

5. Crax Cheese Balls – सिर्फ 0.05% चीज़

दावा: पैकेट पर बड़ा चीज़ का टुकड़ा

सच्चाई: Cheese Solids (0.05%) - बाकी कॉर्न ग्रिट्स, रिफाइंड ऑयल, मसाले और आर्टिफिशियल फ्लेवर।

मुख्य बिंदु – उपभोक्ता क्या करें:

- लेबल पढ़ना सीखें: सामने की फोटो नहीं, पीछे की Ingredients List देखें। पहला Ingredient सबसे ज्यादा मात्रा में होता है।
- % पर ध्यान दें: अगर मशरूम सूप में मशरूम 2.5% है तो बाकी 97.5% क्या है?
- Cheese (0.05%) का अर्थ: यह 10,000 में से 5 हिस्सा है - यानी न के बराबर।
- कानूनी पक्ष: FSSAI के नियमों के अनुसार Ingredients को घटते क्रम में लिखना अनिवार्य है, लेकिन 0.05% जैसी मात्रा को हाइलाइट न करना एक तरह का भ्रामक विज्ञापन है।

संपादकीय टिप्पणी: यह मामला सिर्फ 5 प्रोडक्ट्स का नहीं, पूरे फूड इंडस्ट्री के ट्रेंड का है। कंपनियां 'कंज्यूमर साइकोलॉजी' का फायदा उठाती हैं। आगे से प्रोडक्ट खरीदने से पहले 10 सेकंड लेबल को दें - आपका स्वास्थ्य और पैसा दोनों बचेंगे।

जनहित अपील: STOP MISLEADING ADS AND LABELS

अनाज के भंडार भरे, फिर भी थाली में पोषण की कमी

राजेश जैन

किसी देश की खाद्य सुरक्षा का आकलन उसके खेतों में पैदा होने वाले अनाज और सरकारी गोदामों में जमा भंडार से किया जा सकता है, लेकिन उसकी असली सफलता वहां के लोगों की थाली में दिखाई देती है। यदि किसी परिवार को पेट भरने के लिए पर्याप्त भोजन मिल रहा है, लेकिन दाल, दूध, फल और सब्जियां उसकी पहुंच से बाहर हैं, तो खाद्य सुरक्षा का लक्ष्य अधूरा है।

हमारा देश आज इसी चुनौती का सामना कर रहा है। हम खाद्यान्न उत्पादन में नए रिकॉर्ड बना रहे हैं, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के जरिए करोड़ों लोगों तक अनाज पहुंचा रहे हैं, फिर भी भोजन की उपलब्धता और पोषण के बीच का अंतर बना हुआ है। यह अंतर केवल खेती या खाद्य आपूर्ति का सवाल नहीं, बल्कि आमदनी, महंगाई और सामाजिक असमानता से भी जुड़ा है। हर साल 16 अक्टूबर को मनाया जाने वाला विश्व खाद्य दिवस इस चुनौती पर विचार करने का अवसर देता है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन की स्थापना की वर्षगांठ से जुड़े इस दिवस का संदेश स्पष्ट है-भूख मिटाने के लिए पर्याप्त भोजन पैदा करना जरूरी है, लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं। भोजन हर व्यक्ति की पहुंच में हो और शरीर की जरूरतों को पूरा करने वाला भी हो। उत्पादन का रिकॉर्ड, पहुंच की चुनौती भारत की खाद्य यात्रा उपलब्धियों से भरी है। हरित क्रांति, सिंचाई सुविधाओं, उन्नत बीजों, कृषि अनुसंधान और सरकारी खरीद व्यवस्था ने देश को खाद्यान्न की कमी से उबरने में मदद की। आज भारत बड़ी मात्रा में अनाज पैदा करने में सक्षम है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अनुमानों के अनुसार, कृषि वर्ष 2024-25 में देश का खाद्यान्न उत्पादन बढ़कर 35.773 करोड़ टन पहुंच गया। पिछले वर्ष के 33.23 करोड़ टन के मुकाबले यह लगभग 7.7 प्रतिशत अधिक था। यह किसानों की मेहनत और कृषि व्यवस्था की क्षमता का प्रमाण है।

लेकिन खेत में अनाज पैदा होना और हर परिवार का पौष्टिक भोजन हासिल कर पाना दो अलग-अलग बातें हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली से मिलने वाला गेहूं और चावल गरीब परिवारों के भोजन का आधार मजबूत करते हैं, पर उनसे संतुलित आहार की पूरी जरूरत पूरी नहीं होती। इसका बड़ा कारण परिवारों की सीमित आय है। किराया, बिजली, शिक्षा और इलाज जैसे खर्चों के बाद भोजन के लिए बची रकम अक्सर इतनी नहीं होती कि परिवार नियमित रूप से दाल, दूध, फल और दूसरी पौष्टिक चीजें खरीद सके। ऐसी स्थिति में सस्ता और पेट भरने वाला भोजन प्राथमिकता बन जाता है, जबकि पोषण पीछे छूट जाता है। इसलिए खाद्य सुरक्षा की अगली कसौटी केवल उत्पादन की मात्रा नहीं, बल्कि यह होनी चाहिए कि आम परिवार पौष्टिक भोजन कितनी आसानी से खरीद सकता है।

पेट भरा, लेकिन शरीर को पोषण नहीं कुपोषण का अर्थ हमेशा भूखे पेट रहना नहीं होता। कोई व्यक्ति नियमित भोजन करने के बावजूद जरूरी पोषक तत्वों की कमी का शिकार हो सकता है। अनाज शरीर को ऊर्जा देता है, लेकिन संतुलित आहार के लिए प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम, विटामिन और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व भी जरूरी हैं।

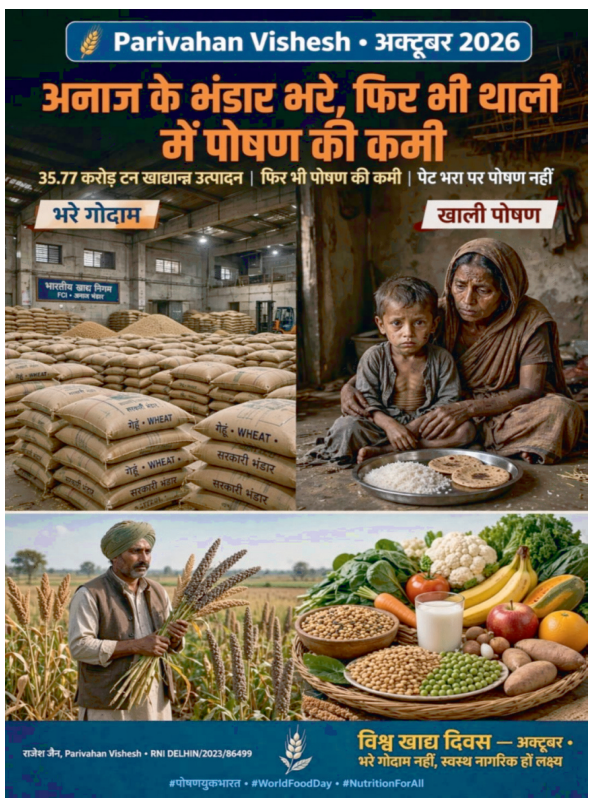
इनकी कमी का असर बच्चों के शारीरिक विकास, महिलाओं के स्वास्थ्य और वयस्कों की कार्यक्षमता पर पड़ सकता है। बच्चों में कम वजन और उम्र के अनुपात में कम लंबाई तथा महिलाओं में एनीमिया जैसे संकेतक बताते हैं कि भोजन की मात्रा बढ़ाने के साथ उसकी गुणवत्ता पर ध्यान देना भी जरूरी है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण जैसे स्रोत इन चुनौतियों की स्थिति समझने में मदद करते हैं। इनके निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि पोषण संबंधी समस्याओं का समाधान केवल अधिक अनाज उपलब्ध कराने से नहीं होगा। परिवारों को विविध और संतुलित आहार मिलना भी जरूरी है। ऐसे में हमें खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा के बीच का अंतर समझना जरूरी है। खाद्य सुरक्षा भोजन की उपलब्धता और उस तक पहुंच सुनिश्चित करती है, जबकि पोषण सुरक्षा यह देखती है कि भोजन शरीर की जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त और विविध है या नहीं।

कृषि नीति में किसान और उपभोक्ता हितों का संतुलन जरूरी पोषण की चर्चा किसान की आर्थिक स्थिति को नजरअंदाज करके नहीं की जा सकती। बीज, खाद, सिंचाई, डीजल और मजदूरी की बढ़ती लागत खेती की लाभप्रदता पर दबाव डालती है। दूसरी ओर, उपभोक्ता चाहता है कि जरूरी खाद्य पदार्थ उचित कीमत पर उपलब्ध हों। किसान को लाभकारी मूल्य और उपभोक्ता को किफायती भोजन उपलब्ध कराना कृषि नीति की महत्वपूर्ण चुनौती है। इसका समाधान केवल उत्पादन बढ़ाने या कीमतों को नियंत्रित करने में नहीं, बल्कि पूरी आपूर्ति व्यवस्था को मजबूत बनाने में है।

बेहतर भंडारण, परिवहन, स्थानीय प्रसंस्करण और बाजार तक किसानों की पहुंच से फसल के बाद होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। इससे किसानों की आय बढ़ाने और उपभोक्ताओं तक खाद्य पदार्थ उचित कीमत पर पहुंचाने में मदद मिल सकती है।

जलवायु परिवर्तन इस चुनौती को और गंभीर बना रहा है। अनियमित मानसून, अत्यधिक गर्मी, सूखा और बेमौसम बारिश कृषि उत्पादन को प्रभावित कर सकते हैं। राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में जल संरक्षण, मिट्टी की सेहत और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल खेती विशेष महत्व रखती है। बाजरा और ज्वार जैसे मोटे अनाज पोषण की दृष्टि से उपयोगी हैं और कई क्षेत्रों में कम पानी के साथ खेती के विकल्प भी उपलब्ध कराते हैं।



इसलिए कृषि नीति का लक्ष्य केवल अधिक उत्पादन नहीं, बल्कि ऐसी व्यवस्था बनाना होना चाहिए जो पर्यावरण के अनुकूल हो, किसान को सम्मानजनक आय दे और उपभोक्ता के लिए पौष्टिक भोजन सुलभ बनाए।

योजनाओं की सफलता थाली में दिखे सार्वजनिक वितरण प्रणाली, आंगनवाड़ी सेवाएं और स्कूलों में पीएम पोषण योजना भारत की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के महत्वपूर्ण आधार हैं। इन योजनाओं ने जरूरतमंद परिवारों, बच्चों और महिलाओं तक सहायता पहुंचाने में भूमिका निभाई है। अब जरूरत इनके प्रभाव का आकलन व्यापक बनाने की है।

योजनाओं की सफलता केवल वितरित अनाज या लाभार्थियों की संख्या से नहीं मापी जानी चाहिए। यह देखना भी जरूरी है कि राशन समय पर मिल रहा है या नहीं, स्कूलों में भोजन की गुणवत्ता कैसी है और बच्चों तथा महिलाओं की पोषण संबंधी जरूरतें कितनी पूरी हो रही हैं।

मौजूदा राशन व्यवस्था को कमजोर किए बिना उसे पोषण कार्यक्रमों से बेहतर ढंग से जोड़ा जा सकता है। स्थानीय जरूरतों और उपलब्धता के अनुसार दालों, मोटे अनाज और अन्य पौष्टिक खाद्य पदार्थों को शामिल करने के विकल्पों पर विचार किया जाना चाहिए। साथ ही, नियमित निगरानी और शिकायतों के त्वरित समाधान की व्यवस्था मजबूत होनी चाहिए।

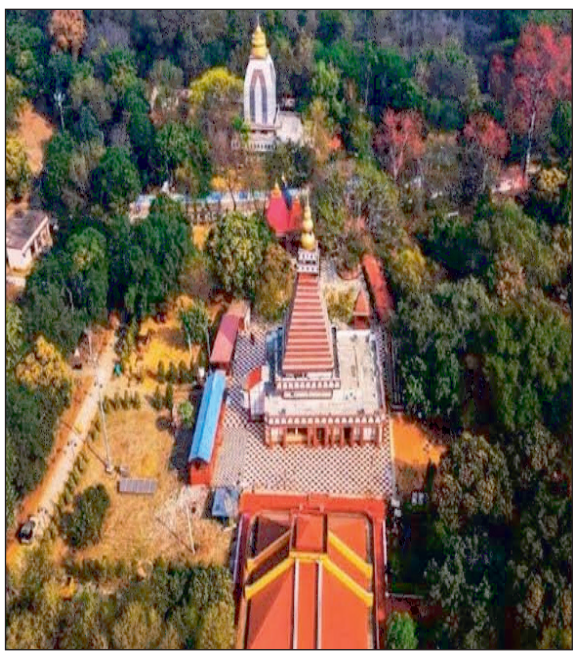
वैश्विक तस्वीर भी चिंता बढ़ाती है संयुक्त राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा एवं पोषण संबंधी रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 में दुनिया के लगभग 64.5 करोड़ लोग भूख से प्रभावित थे, जबकि करीब 269 करोड़ लोग स्वस्थ आहार की न्यूनतम लागत वहन नहीं कर सकते थे। ये आंकड़े बताते हैं कि भूख का संकट केवल खाद्य उत्पादन की कमी से नहीं, बल्कि भोजन की कीमत और लोगों की आर्थिक क्षमता से भी जुड़ा है।

भरे गोदाम नहीं, स्वस्थ नागरिक हों लक्ष्य भारत ने खाद्यान्न उत्पादन और जरूरतमंदों तक अनाज पहुंचाने में बड़ी प्रगति की है। अब चुनौती इस उपलब्धि को लोगों की सेहत में बदलने की है। इसके लिए कमजोर आय वाले परिवारों की क्रय शक्ति बढ़ाने, खाद्य महंगाई का असर कम करने, किसानों को बेहतर बाजार उपलब्ध कराने और पोषण योजनाओं की गुणवत्ता सुधारने पर ध्यान देना होगा। साथ ही, खाद्य पदार्थों की बर्बादी रोककर उनकी सुरक्षित पहुंच सुनिश्चित करनी होगी।

विश्व खाद्य दिवस पर सबसे अहम सवाल यही है कि क्या देश की कृषि उपलब्धियां हर परिवार की थाली तक पहुंच रही हैं? भूख मुक्त भारत का लक्ष्य तभी पूरा होगा, जब किसी परिवार को आर्थिक मजबूरी में पेट भरने और पौष्टिक भोजन पाने के बीच चुनाव न करना पड़े। भरे गोदाम खाद्य सुरक्षा की उपलब्धि हैं, लेकिन हर थाली में पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन तथा हर नागरिक का बेहतर स्वास्थ्य ही इसकी असली सफलता है।

लोक आस्था का संगम:भद्रकाली मेला

अमरपाल सिंह वर्मा



राजस्थान अपनी समृद्ध स्थापत्य कला, ऐतिहासिक धरोहरों और रंग-बिरंगी लोक संस्कृति के लिए पूरे देश में विशिष्ट पहचान रखता है। यहां के किले, मंदिर, हवेलियां और लोक परंपराएं जितनी प्रसिद्ध हैं, उतना ही महत्व यहां लगने वाले मेलों का भी है। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में वर्ष भर अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक मेले आयोजित होते हैं जो केवल आस्था के केंद्र ही नहीं बल्कि सामाजिक जीवन और लोक संस्कृति के जीवंत उत्सव भी होते हैं। इन्हीं मेलों में हनुमानगढ़ जिले में लगने वाला भद्रकाली मेला विशेष महत्व रखता है।

हनुमानगढ़ जिले में मां भद्रकाली का ऐतिहासिक मंदिर क्षेत्र की लोक आस्था का केंद्र है। नवरात्रों में यहां लगने वाला मेला सवा सौ साल से अधिक पुरानी परंपरा का जीवंत प्रतीक है जिसमें हर वर्ष हजारों श्रद्धालु शामिल होते हैं। हनुमानगढ़ टाउन से लगभग सात किलोमीटर दूर स्थित मां भद्रकाली का ऐतिहासिक मंदिर इस मेले का मुख्य केंद्र है। यहां नवरात्रों के दौरान मेला भरता है। वैसे तो नवरात्रा स्थापना के साथ ही मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन आरंभ हो जाता है लेकिन चैत्र सुदी अष्टमी और नवमी को दो दिनों के विशाल मेला में तो हजारों लोग उमड़ते हैं । लोकशक्ति की प्रतीक मां भद्रकाली के दर्शन के लिए वैसे तो पूरे वर्ष श्रद्धालु यहां आते रहते हैं लेकिन इन विशेष तिथियों पर श्रद्धालुओं की भीड़ कई गुना बढ़ जाती है। आसपास के गांवों और कस्बों के अलावा पड़ोसी राज्यों पंजाब और हरियाणा से भी हजारों श्रद्धालु पहुंचते हैं।

मेले के दौरान आम दिनों में शांत और वीरान रहने वाला यह क्षेत्र चहल-पहल से भर उठता है। बड़ी संख्या में सजी दुकानों, खिलौनों और घरेलू वस्तुओं की बिक्री करने वाले फेरीवालों, बच्चों के झूलों और रंग-बिरंगे परिधानों में सजे लोगों की भीड़ इस स्थान को एक बड़े उत्सव स्थल में बदल देती है। हर ओर 'मां भद्रकाली की जय' और 'काली माता की जय' के जयकारे गूंजते रहते हैं। लंबी कतारों में जुटे श्रद्धालु घंटों खड़े रहकर मंदिर तक पहुंचते हैं, जहां वह अपनी मनोकामनाएं लेकर माता के चरणों में माथा टेकते हैं। लोक मान्यता है कि यहां सच्चे मन से मांगी गई मुराद अवश्य पूरी होती है।

भद्रकाली का यह मेला सवा सौ वर्ष से भी अधिक समय से लगातार आयोजित होता आ रहा है। समय के साथ इसकी लोकप्रियता और श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ती रही है। यह मेला केवल धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। मेले में आने वाले लोगों के लिए यह आस्था के साथ-साथ मेलजोल और आनंद का अवसर भी होता है।

मंदिर की स्थापना को लेकर भी कई जन श्रुतियां प्रचलित हैं। माना जाता है कि यह मंदिर मुगल सम्राट अकबर के समय का है और इसकी स्थापना बीकानेर रियासत के छठे महाराजा राम सिंह ने करवाई थी। मंदिर की स्थापत्य शैली भी इसे विशिष्ट बनाती है। इसकी बनावट अन्य काली मंदिरों से अलग दिखाई देती है। मंदिर का गुंबद मस्जिद की शैली में बना हुआ है, जो इसे एक अनोखा स्थापत्य स्वरूप प्रदान करता है और उस दौर की सांस्कृतिक विविधता की झलक भी दिखाता है।

मंदिर की स्थापना से जुड़ी एक रोचक जनश्रुति प्रचलित है। कहा जाता है कि एक बार सम्राट अकबर बीकानेर के महाराजा रामसिंह के साथ इस क्षेत्र से गुजर रहे थे। उस समय यहां घना जंगल था। भूख-प्यास से व्याकुल होने पर उन्हें एक टीले पर खड़ी महिला मिली, जिसने तुरंत भोजन-पानी की व्यवस्था कर दी। अकबर ने उसे दैवीय शक्ति मानते हुए सेवा का आग्रह किया, जिस पर उस महिला ने यहां काली माता का मंदिर बनवाने की इच्छा जताई। इसके बाद अकबर के आदेश पर महाराजा रामसिंह ने यहां मंदिर का निर्माण कराया।

मंदिर परिसर में माता के अनन्य भक्त अमरनाथ जी का मंदिर भी है। किवदंती है कि उन्होंने अकबर के साले को किले के निर्माण के लिए अक्षय खजाना दिया था लेकिन बाद में उसकी नीयत बिगड़ गई। पश्चाताप होने पर वह अमरनाथ जी के पास पहुंचा। तब अमरनाथ जी ने मां काली के मंदिर के सामने जीवित समाधि लेकर अपनी समाधि पर मंदिर बनवाने की बात कही। आज वहां स्थित अमरनाथ मंदिर भी श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है।

आज भद्रकाली मंदिर क्षेत्र की जनआस्था और भक्ति का प्रतीक बन चुका है। इस मंदिर से जुड़ी एक विशेष बात यह भी है कि हर वर्ष बरसात के मौसम में आने वाली घग्गर नदी की बाढ़ का पानी इन मंदिरों के आसपास फैल जाता है। उस समय पूरा क्षेत्र पानी से घिरा हुआ दिखाई देता है। हालांकि चैत्र मास तक यह पानी एक सीमित धारा में बहने लगता है और मेले के दिनों तक अधिकांश पानी सूख जाता है जिससे श्रद्धालुओं के लिए मंदिर तक पहुंचना आसान हो जाता है।

यह मंदिर देवस्थान विभाग के अधीन है और यहां पूजा-अर्चना तथा अन्य व्यवस्थाओं का संचालन विभाग की देखरेख में किया जाता है। मेले के दौरान स्थानीय प्रशासन और हनुमानगढ़ सेवा समिति (भारत क्लब) द्वारा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए विभिन्न व्यवस्थाएं की जाती हैं। भद्रकाली मेला केवल धार्मिक आयोजन भर नहीं है, बल्कि यह क्षेत्र की लोक आस्था, परंपरा और सामाजिक जीवन का जीवंत प्रतीक भी है। यहां आने वाले हजारों श्रद्धालु केवल पूजा-अर्चना ही नहीं करते बल्कि इस अवसर को उत्सव की तरह मनाते हैं। इस प्रकार यह मेला आस्था, इतिहास और लोक संस्कृति के संगम का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है।(अदिति फीचर्स)



धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

17 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 1 — नई शुरुआत, नेतृत्व, आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और पहल

मूलांक 1

धन व करियर: आपके मूलांक 1 और दिन के अंक 1 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। नेतृत्व, स्वतंत्रता और पहल बढ़ेगी। नई पेशेवर या आर्थिक शुरुआत लाभ दे सकती है, यदि आत्मविश्वास के साथ व्यावहारिक विवरण भी जांचें।
रिश्ते: दोहरी 1 ऊर्जा आपको अधिक स्वयं-केंद्रित बना सकती है। जुड़ाव की पहल करें, लेकिन सामने वाले को बराबर स्पेस और सम्मान दें।
सावधानी: अहंकार की टकराहट, अचानक खर्च और केवल स्वयं निर्णय लेने के कारण सलाह नकारने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण काम शुरू करें और रिश्ते में उत्तर देने से पहले सचेत होकर सुनें।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 1 आपको हिचकिचाहट से बाहर निकलकर स्वतंत्र निर्णय लेने को कहता है। साझेदारी मदद कर सकती है, लेकिन आगे बढ़ने के लिए हर व्यक्ति की स्वीकृति का इंतजार न करें।
रिश्ते: दिन की मजबूत व्यक्तिगत ऊर्जा आपकी संवेदनशीलता को प्रभावित कर सकती है। चुप होने या सामने वाले से अनुमान लगाने की अपेक्षा करने के बजाय अपनी जरूरत स्पष्ट कहें।
सावधानी: निर्भरता, अनिर्णय और किसी दृढ़ प्रतिक्रिया को व्यक्तिगत लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक आत्मविश्वासी निर्णय लें और संवाद को नरम रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 1 आपकी रचनात्मक और अभिव्यक्तिपूर्ण ऊर्जा को मजबूत शुरुआत देता है। नया विचार प्रस्तुत करने, प्रोजेक्ट शुरू करने या पेशेवर परिचय के लिए अच्छा दिन है।
रिश्ते: आपकी वाणी ध्यान आकर्षित कर सकती है, लेकिन बातचीत पर हावी न हों। ताजा और सकारात्मक संवाद रिश्ते को बेहतर कर सकता है।
सावधानी: अधिक वादा, दिखावे का खर्च और एक साथ बहुत कुछ शुरू करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: सबसे मजबूत विचार चुनें और उसका पहला स्पष्ट कदम उठाएं।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 1 आपको पूर्ण परिस्थितियों का इंतजार करने के बजाय शुरुआत करने को कहता है। नया सिस्टम, बजट या व्यावहारिक योजना शुरू करें जो लंबी अवधि में स्थिरता दे सके।
रिश्ते: स्वतंत्रता की ऊर्जा आपकी व्यवस्थित प्रकृति को जिद्दी बना सकती है। जरूरत स्पष्ट कहें, लेकिन उसे कठोर नियम न बनाएं।
सावधानी: बदलाव का विरोध, अत्यधिक सावधानी और केवल अपना तरीका सही मानने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक व्यावहारिक पहला कदम लें और एक उचित समझौता स्वीकार करें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 1 आपकी अनुकूल और तेज ऊर्जा के साथ मिलकर नए अवसर ला सकता है। नया संपर्क, बिक्री, यात्रा या विचार रास्ता खोल सकता है, लेकिन प्रतिबद्धता से पहले शर्तें जांचें।
रिश्ते: आज स्वतंत्रता की इच्छा अधिक हो सकती है। योजनाएं स्पष्ट रखें ताकि आपकी आजादी किसी अपने के लिए अनिश्चितता न बने।
सावधानी: अचानक खरीदारी, जल्दबाजी की प्रतिबद्धता और बिना सोचे दिशा बदलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: कई अवसरों के पीछे भागने के बजाय एक उपयोगी अवसर की शुरुआत करें।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 1 आपको अपनी आर्थिक और पेशेवर प्राथमिकताओं को भी महत्व देने को कहता है। घर, रचनात्मकता या क्लाइंट से जुड़ी नई योजना स्पष्ट सीमाओं के साथ अच्छी शुरुआत कर सकती है।
रिश्ते: आप स्वाभाविक रूप से दूसरों की देखभाल करते हैं, लेकिन आज अपनी जरूरतें भी व्यक्त करें। प्यार और आत्मसम्मान का संतुलन रिश्ते को बेहतर करेगा।
सावधानी: अपनों पर जरूरत से ज्यादा खर्च, हर जिम्मेदारी उठाने और देखभाल के नाम पर नियंत्रण से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक व्यक्तिगत प्राथमिकता तय करें और उसे अपनापन रखते हुए बताएं।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 1 आपकी गहरी सोच को कार्य में बदलने को कहता है। जिस विचार पर पर्याप्त शोध हो चुका है, उसे अब ठोस पेशेवर या आर्थिक कदम में बदला जा सकता है।
रिश्ते: आप निजी तौर पर सोचने के आदी हो सकते हैं, लेकिन नई शुरुआत के लिए कुछ खुलापन जरूरी है। पूरी निश्चितता का इंतजार करने के बजाय जरूरी बात साझा करें।
सावधानी: अत्यधिक विश्लेषण, अलगाव और पर्याप्त जानकारी के बाद भी निर्णय टालने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक सत्यापित समझ पर कदम उठाएं और एक ईमानदार संदेश भेजें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 1 आपकी महत्वाकांक्षी ऊर्जा में पहल जोड़ता है। जिम्मेदारी लेने, आर्थिक लक्ष्य तय करने या गंभीर व्यावसायिक कदम शुरू करने के लिए मजबूत दिन है, यदि जोखिम नियंत्रित रहे।
रिश्ते: मजबूत अधिकार शक्ति संघर्ष बन सकती है। अपने निर्णयों का नेतृत्व करें, लेकिन सामने वाले के निर्णयों को नियंत्रित करने की कोशिश न करें।
सावधानी: प्रभुत्व, जोखिमपूर्ण विस्तार और केवल ताकत साबित करने के लिए निर्णय से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अधिकार का उपयोग प्रगति के लिए करें, दबाव के लिए नहीं।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 1 आपके मूलांक 9 की समापन ऊर्जा के बाद नई दिशा खोलता है। केवल आदत के कारण पुराना काम जारी रखने के बजाय संसाधनों को उद्देश्यपूर्ण नए लक्ष्य की ओर लगाएं।
रिश्ते: पुरानी बहस को वर्तमान में न लाने पर नया भावनात्मक अध्याय शुरू हो सकता है। नई प्रतिक्रिया चुनें और स्वस्थ सीमाएं बनाए रखें।
सावधानी: गुस्सा, आवेग में उदारता और अतीत से सीख लिए बिना नई शुरुआत से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक पुराना पैटर्न छोड़ें और एक रचनात्मक नया कदम शुरू करें।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

बाड़ी में विराजमान मां हिंगलाज देवी का दरबार, जहां मन्नत पूरी होने पर भक्त चढ़ाते हैं चुनरी

16वीं शताब्दी में बलूचिस्तान (पाकिस्तान) से ज्योति रूप में मां को लेकर आए थे संत भगवान दास जी — संतान प्राप्ति से लेकर सुख-समृद्धि की कामना लेकर पहुंचते हैं लाखों श्रद्धालु

विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार
पत्र रायसेन / बाड़ी।



शारदीय नवरात्रि में देवी मंदिरों में भक्तों की भीड़ दर्शन-पूजन और आरती के लिए उमड़ रही है। रायसेन जिले के बाड़ी तहसील मुख्यालय में स्थित मां हिंगलाज देवी का प्राचीन मंदिर भी श्रद्धालुओं की धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है।

मान्यता है कि यहां सच्चे मन से मांगी गई मुराद मां हिंगलाज देवी पूरी करती हैं। यही वजह है कि नवरात्रि के दौरान यहां दूर-दराज के क्षेत्रों से चैत्र और क्वांर की नवरात्रि पर लाखों की संख्या में भक्त दर्शन करने पहुंचते हैं। मनोकामना पूरी होने पर कोई चुनरी चढ़ाता है, तो कोई भंडारे का आयोजन कर मां के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता है।

1. मंदिर की पवित्र कथा — 500 साल पुरानी आस्था

मूल शक्तिपीठ: मां हिंगलाज का मूल शक्तिपीठ पाकिस्तान के बलूचिस्तान में है, जिसे नानी पीर / नानी की दरगाह भी कहते हैं। वह 51-52 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है।

बाड़ी में आगमन की कथा:

16वीं शताब्दी में खाकी अखाड़े के महंत संत भगवान दास जी महाराज भगवान राम के भक्त थे। उनके मन में मां हिंगलाज के दर्शन की लालसा हुई। लोककथा के अनुसार मां ने उन्हें स्वप्न में दर्शन दिए और कन्या रूप में कहा — मुझे बाड़ी ले चलो।

महंत जी दो शिष्यों के साथ करीब 2 वर्ष की कठिन पदयात्रा कर बलूचिस्तान पहुंचे। वे संग्रहणी रोग से ग्रसित हो गए, फिर भी यात्रा नहीं रुकी। मां की कृपा से वे ज्योति रूप में मां को लेकर बाड़ी आए। उस समय बाड़ी घना जंगल और दुर्गम स्थान था, जिसे खाकी राम-जानकी अखाड़ा कहा जाता था।

महंत जी ने ज्योति को मूर्ति के सामने स्थापित किया और बाद में वह ज्योति मूर्ति में समाहित हो गई। तभी से यह स्थान हिंगलाज कहलाता है। आज भी मंदिर में अखंड ज्योति अनवरत जल रही है — कहा जाता है कि यह 500 वर्षों से लगातार जल रही है।

नाम का अर्थ: हिंग = रौद्र रूप, लाज = लज्जा। कथा के अनुसार गुस्से में शिव के सीने पर पैर रखने के बाद मां शक्ति लज्जित हुईं — रौद्र और लज्जा मिलकर हिंगलाज नाम पड़ा। अर्थ — सबको तत्काल फल देने वाली मां।

हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल:

- मंदिर परिसर में महंत भगवान दास जी की समाधि और पीर बाबा की समाधि दोनों हैं।
- बेगम कुदेशिया / सिकंदरा ने परीक्षा के लिए मांस के टुकड़ों का थाल भोग में भेजा, जो मां की कृपा से मिठाई/प्रसाद में बदल गया। इससे प्रभावित होकर उन्होंने मंदिर को लगभग 65-100 एकड़ जमीन दान में दी।
- मंदिर में संस्कृत पाठशाला और यज्ञशाला भी है, जहां 100 से अधिक विद्यार्थी विद्या पाते हैं।
- महंत जी की धूनी भी आज भी जलती रहती है।

2. मंदिर का समय और पूजा व्यवस्था

- मंदिर खुलने का समय: सुबह 5:30 बजे — रात 8:30 बजे तक
- प्रातः आरती: सुबह 6:00 बजे
- संध्या आरती: शाम 7:00 बजे (नवरात्रि में विशेष)
- नवरात्रि में विशेष व्यवस्था: प्रातः 4:30 बजे से ही भक्तों के लिए दर्शन शुरू, देर रात तक पूजा-अर्चना, चुनरी यात्रा और भंडारा

क्या चढ़ाया जाता है: नारियल, फल-फूल, बेलपत्र, लाल चुनरी, ध्वज, मन्नत का धागा, भंडारा, कढ़ाई/प्रसाद

संतान प्राप्ति की मन्नत: संतान सुख के लिए माताएं यहां आकर घंटियां बांधती हैं, चुनरी चढ़ाती हैं और मन्नत पूरी होने पर पुनः दर्शन के लिए आती हैं।

3. यहां कैसे पहुंचें — पूरा मार्ग

पता: मां हिंगलाज देवी मंदिर, बाड़ी, जिला रायसेन, मध्य प्रदेश — पिन कोड 464665

स्थान: बारना नदी (नर्मदा की सहायक नदी) के उत्तरी तट पर, राजमार्ग क्र. 12 पर

- सड़क मार्ग से:

- भोपाल से जबलपुर की ओर — भोपाल से लगभग 100 किमी
- रायसेन जिला मुख्यालय से लगभग 60-70 किमी
- बाड़ी तहसील मुख्यालय में ही मंदिर स्थित है, बस स्टैंड से पैदल / ऑटो से पहुंचा जा सकता है

- रेल मार्ग से:

- निकटतम रेलवे स्टेशन — भोपाल जंक्शन (लगभग 100 किमी), सोहागपुर (लगभग 44 किमी), नर्मदापुरम
- भोपाल / सोहागपुर से बस या टैक्सी द्वारा बाड़ी पहुंच सकते हैं

- हवाई मार्ग से:

- राजा भोज एयरपोर्ट, भोपाल — लगभग 110 किमी

स्थानीय यात्रा सुझाव: नवरात्रि में बाड़ी में विशेष बसें और ऑटो सेवा उपलब्ध रहती है। भक्त पैदल यात्रा भी करते हैं — समनापुर से आई महिला श्रद्धालु ने बताया कि वे 10 वर्षों से पैदल यात्रा करके आ रही हैं।

4. ठहरने और खान-पान की व्यवस्था

- मंदिर परिसर में: धर्मशाला और भक्त निवास की व्यवस्था है। नवरात्रि में भक्तों के लिए अस्थायी पंडाल और ठहरने की जगह बनाई जाती है।

- बाड़ी में: छोटे होटल, लॉज और गेस्ट हाउस उपलब्ध हैं। नवरात्रि में पहले से बुकिंग कराना उचित है।

- भोपाल / रायसेन में ठहरना: अधिक सुविधाओं के लिए भोपाल या रायसेन में ठहरकर दिन में बाड़ी का दर्शन कर सकते हैं।

- खान-पान: मंदिर परिसर में नवरात्रि के दौरान प्रतिदिन भंडारा होता है। आसपास के बाजार में व्रत का खाना, फलाहार, हलवा-पूड़ी, कचौरी और शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलब्ध रहता है। स्थानीय दुकानों पर प्रसाद, चुनरी, नारियल और पूजा सामग्री आसानी से मिल जाती है।

भक्तों के अनुभव:

> समुदर जागीर से पैदल आए भक्त — ₹हम पैदल यात्रा करके आए हैं। संत भगवान दास जी माता को ज्योति रूप में यहां विराजमान करके लाए थे। माता सबकी मनोकामना पूर्ण करती हैं, हमारी भी बहुत सारी मनोकामनाएं पूरी की हैं। जय माता दी !"

> समनापुर की महिला श्रद्धालु — ₹मैं लगातार 10 सालों से पैदल यात्रा करके आती हूं, क्योंकि यहां जो भी मांगो, मन्नत पूरी होती है।₹

5. नवरात्रि में विशेष उत्साह मंदिर परिसर में लाल चुनरी, ध्वज, फूलों और गेंदा माला से सजावट की गई है। देवी मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ रही है। सुबह से लेकर देर रात तक दर्शन-पूजन चलता रहता है।

बाड़ी का यह दरबार भक्तों के लिए आस्था, विश्वास और उम्मीद का केंद्र बना हुआ है।

शक्ति पूजा के बाद शस्त्र पूजन

डा. विनोद बब्बर



शरदीय नवरात्र के बाद विजयादशमी यानि देवी पूजा के बाद शस्त्र पूजा। कहा जाता है कि रावण से युद्ध से पूर्व राम ने शक्ति की देवी दुर्गा की पूजा कर रावण पर विजय प्राप्त की थी। महाकवि निराला जी ने 'राम की शक्ति पूजा' में भी इसका विस्तृत उल्लेख किया है।

आश्विन शुक्ल दशमी को प्रभु श्रीराम ने आततायी रावण का वध कर माता सीता को मुक्त कराते हुए संसार को भय मुक्त किया। इसीलिए हर बस्ती हर गांव हर नगर में होने वाली रामलीलाओं का आयोजन होता है। दशहरे के दिन विजय जुलूस के बाद रावण और इसके साथियों के पुतले जलाकर विजयदशमी का पर्व मनाते हैं। लेकिन विजयादशमी को रावण वध तक सीमित नहीं किया जा सकता। विजयदशमी शस्त्र पूजा का भी अवसर है ।

कहा जाता है कि अर्जुन ने धनुर्विद्या की निपुणता के आधार पर, इसी दिन स्वयंवर में द्रोपदी का वरण किया था। महाभारत का युद्ध भी इसी दिन प्रारंभ होने की किवदंति भी है। राजा विक्रमादित्य ने इसी दिन देवी हरसिद्धि की आराधना, पूजा की थी। छत्रपति शिवाजी ने भी इसी दिन देवी दुर्गा को प्रसन्न कर तलवार प्राप्त की थी। तभी से मराठा अपने शत्रु पर आक्रमण की शुरुआत विजयादशमी से ही करते थे। दक्षिण के प्रसिद्ध विजयनगर साम्राज्य के कृष्णदेव राय के दशहरे एवं जुलूस का वर्णन तत्कालीन पुर्तगाली यात्री पेई ने भी किया है। इस दिन कुश्ती, मुक्केबाजी एवं हाथी दंगल आदि कार्यक्रमों का आयोजन भी होता था। मैसूर में तो आज भी दशहरे पर विशेष शोभायात्रा आतिशबाजी आदि होती है। केवल यही नहीं ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें शस्त्र पूजा-शक्ति पूजा का उल्लेख है।

शक्ति पूजा आज भी जारी है। हाँ, अब इसका स्वरूप और समय जरूर बदल गया है। हर वर्ष २६ जनवरी यानि अपने गणतंत्र दिवस पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर हम प्रतीकात्मक रूप से शस्त्र पूजा ही तो करते हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र की ओर से इसके सर्वोच्च सेनापति राष्ट्रपति द्वारा सैन्य टुकड़ियों की सलामी और अस्त्र-शस्त्रों की परेड शक्ति पूजा ही है। इससे भी न केवल हमारे सैनिकों बल्कि समस्त देशवासियों में आत्मविश्वास का संचार करने वाली शक्ति जागृत होती है। हमारा दर्शन है- 'न भय काहू को देत, न भय मानत आन।' हमारे लिए शांति और शक्ति एक दूसरे के प्रतिगामी नहीं परस्पर सहयोगी हैं। शांति के लिए शक्ति जरूरी है। क्षमा भी वीरों की ही शोभा पाती है।

सांस्कृतिक और संसाधनों से सशक्त व्यक्ति और समाज ही शक्तिशाली माना जाता है। दीन-हीन द्वारा किसी को क्षमा करना उपहास का पात्र समझा जाता है। स्मरण रहे- शक्ति केवल शस्त्र में ही नहीं होती बल्कि हमारे मन-मस्तिष्क में भी होती है जो सजगता और तत्काल प्रतिक्रिया के अभ्यास से अपनी तेजस्विता कायम रखती है वरना उसका निस्तेज होना तय है।

जिन्होंने हमारे देश की बेटियों के सिंदूर पोंछने का षड्यंत्र किया उन्हें उनके घर में घुसकर सबक सिखाने के लिए किया गया **'आपरेशन सिंदूर'** भारतीय सेना द्वारा शक्ति पूजा ही तो था। कुछ लोग कह सकते हैं कि जिस तरह से दुष्ट अभी नहीं सुधरा है, उसके लिए एक आपरेशन काफी न हो लेकिन शांति की कामना करने वाले लगातार शक्ति पूजा की अपनी सामर्थ्य और संकल्प के साथ भारत का एक-एक वीर जवान सदैव तत्पर है ।

शक्तिपूजा की सामर्थ्य बनाए रखने के लिए शक्ति के आधुनिकतम स्वरूपों से निरंतर सम्पर्क संवाद आवश्यक है। आज ज्ञान-विज्ञान सबसे बड़ी शक्ति है। शस्त्र उपयोग का ज्ञान बेशक सैनिकों के लिए ही आवश्यक होना चाहिए लेकिन ज्ञान रुपी शक्ति प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है। ज्ञान के बिना मनुष्य को 'ते मृत्युलोके भूविभार भूता, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति' की संज्ञा दी गई है। आज जिस तेजी से हमारा जीवन बदल रहा है वह विज्ञान का ही चमत्कार है। अतः वैज्ञानिक, विचारक भी बदलते दौर के सैनिक हैं।

अर्थ के बिना जीवन के व्यर्थ होने की बाते सैद्धांतिक रूप से ठीक हो सकती हैं पर व्यवहारिक रूप से अर्थ ही न केवल हमारे अपितु हमारे समाज और राष्ट्र को अर्थवान बनाता है। आज अपनी अर्थप्रधानता के कारण ही तो कुछ देश पूरी दुनिया पर थानेदारी कर रहे हैं। केवल आज से ही बल्कि आदिकाल से लक्ष्मी पूजन होना अर्थ के महत्व के अतिरिक्त आखिर क्या है? विद्या ददाति विनयं, विनयादयाति यात्रतां। यात्रत्वाद धनमाप्नोती, धनाद धर्मस्ततः सुखं।। अर्थात विद्या से विनय - विनय से यात्रता, यात्रता या योग्यता से धन, धन से धर्म एवं धर्म के पालन से सुख की प्राप्ति होती है। स्पष्ट है कि अर्थ अर्थवान ही है। हाँ, साधन शुद्धि जरूरी है। गलत रास्ते से आया धन शक्ति नहीं, संदेह बढ़ाता है जो अंततः पतन की ओर ले जाता है।

भारतीय संस्कृति हमारी शक्ति है। भारतीय भाषाएं हमारी शक्ति हैं। हमारे किसान, हमारे मजदूर भाई शक्ति के स्रोत हैं। जाति, धर्म, क्षेत्र के भेदभाव से ऊपर उठकर एकजुट, सशक्त भारत के निर्माण का संकल्प भी शक्ति पूजा की प्रथम अवस्था है। इस देश के आखिर जन को साथ लिए बिना शक्तिशाली भारत की कल्पना अधूरी है। शक्ति का पूजन व्यर्थ है। हमें स्वीकारना ही होगा कि सबका साथ, सबका विकास शक्तिपूजा की आरती है। अरदास है। नमाज है। मंगलमंत्र है।

विजयदशमी, दशहरा, शस्त्रपूजन के अवसर पर गुरु गोविंद सिंह जी द्वारा रचित शस्त्र नाम माला नामक ग्रन्थ की चर्चा समयीन होगी जिसमें शताधिक शस्त्रों का उल्लेख करते हुए उन्हें अध्यात्मिक गरिमा प्रदान की है। आपने कहा है-

नमस्कार सी खड्ग कउ करौ सुहित चित लाई।
पूरन करौ गिर थ इह तुम मोहि करहु सहाई।

जाप साहब में शक्तिशाली होने और शस्त्र का महत्व बताते हुए कलगीधर दशमेश पिता उद्घोष करते हैं-

नमो शस्त्र पाणे, नमो अस्त्र माणे.
नमो परम ज्ञाता, नमो लोकमाता।
गरब गंजन, सरब भंजन,
नमो युद्ध युद्ध, नमो कलह कर्ता. नमो नित नारायणे क्रूर कर्ता।

सेवा संकल्प अभियान के तहत 5100 विद्यार्थियों ने बनाई भव्य मानव श्रृंखला

विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक मानव श्रृंखला बनाकर दिया विकसित भारत @ 2047 का संदेश

झज्जर क्रिकेट स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, डीसी वर्षा खांगवाल सहित गणमान्य व्यक्तियों ने बढ़ाया विद्यार्थियों का उत्साह

विद्यार्थियों ने मानव रंगोली के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और भारतीय संस्कृति का दिया संदेश



झज्जर, 16 अक्टूबर

सेवा संकल्प अभियान के तहत शुक्रवार को झज्जर के दिल्ली रोड स्थित क्रिकेट स्टेडियम में 5100 विद्यार्थियों ने भव्य मानव श्रृंखला बनाकर विकसित भारत @ 2047 के संकल्प को साकार करने का सार्थक संदेश दिया। शिक्षा विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने सामाजिक एकजुटता, जनभागीदारी और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने का संकल्प प्रदर्शित किया। इस दौरान पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, डीसी वर्षा खांगवाल, जिला परिषद चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना, भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि, संजय कबलाना, आनंद सागर व मनीष बंसल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। सभी अतिथियों ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनकी सहभागिता की सराहना की।

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार प्रदेशभर में 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक सेवा संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में जिले में अभियान के तहत सेवा, सहयोग और जनभागीदारी की भावना को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसी कड़ी में झज्जर क्रिकेट स्टेडियम में आयोजित मानव श्रृंखला के माध्यम से विद्यार्थियों ने विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका का संदेश दिया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अनुशासित ढंग से मानव श्रृंखला बनाकर सामूहिक एकजुटता और राष्ट्र के विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। आयोजन का उद्देश्य युवाओं को राष्ट्र निर्माण के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ उनमें सामाजिक जिम्मेदारी, अनुशासन और सामूहिक प्रयासों की भावना को मजबूत करना रहा।

मानव रंगोली के माध्यम से दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

कार्यक्रम में मानव रंगोली के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति के अनुकूल संसाधनों के उपयोग और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने का संदेश दिया गया। रंगोली में विकसित भारत @ 2047 की परिकल्पना को रचनात्मक तरीके से प्रदर्शित किया गया। इस गतिविधि ने विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने और पारंपरिक कला को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

शिक्षा विभाग ने किया अतिथियों का स्वागत

कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी रतींद्र सिंह, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी राजबाला मलिक और जिला परियोजना समन्वयक अनिल शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने आयोजन की व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संपन्न करवाया।

डीईओ ने कहा कि इस तरह के आयोजन विद्यार्थियों में रचनात्मकता, अनुशासन, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र के विकास में योगदान देने की भावना को प्रोत्साहित करते हैं। सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से जनभागीदारी को बढ़ावा देते हुए विकसित और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की दिशा में सामूहिक प्रयासों को मजबूती दी जा रही है। कार्यक्रम में मंच संचालन प्रवक्ता संजय शर्मा ने किया जबकि मानव श्रृंखला बनाने में



प्रवक्ता कृष्ण वशिष्ठ, एल ए स्कूल के प्रवक्ता मुकेश शर्मा व आईटीआई से नीरज सहगल ने उल्लेखनीय भूमिका अदा की।

इस अवसर पर एल ए सीनियर सेकेंडरी स्कूल झज्जर, संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास, एच आर ग्रीन फील्ड स्कूल व एस एफ एस स्कूल बिरधाना के विद्यार्थियों की भागीदारी रही।

महिला पुरस्कारों के लिए 5 नवंबर तक करें ऑनलाइन आवेदन : डीसी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को किया जाएगा सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 16 अक्टूबर

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च 2027 के अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट, सराहनीय एवं उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने वाली महिलाओं को सम्मानित करने के लिए महिला पुरस्कारों हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। पात्र एवं इच्छुक महिलाएं आगामी 5 नवंबर तक विभाग के ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकती हैं। यह जानकारी डीसी वर्षा खांगवाल ने दी।

डीसी ने बताया कि महिलाओं की उपलब्धियों को प्रोत्साहित करने, उनके योगदान को सम्मान देने तथा समाज में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। इन पुरस्कारों के तहत महिलाओं को नकद राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि पुरस्कारों के अंतर्गत श्रीमती सुषमा स्वराज अवार्ड के लिए 5 लाख रुपये, इंदिरा गांधी महिला शक्ति अवार्ड के लिए 1 लाख 50 हजार रुपये, कल्पना चावला शौर्य अवार्ड के लिए 1 लाख रुपये तथा बहन शन्नो देवी पंचायती राज अवार्ड के लिए 1 लाख रुपये की नकद पुरस्कार राशि निर्धारित की गई है। इसके अतिरिक्त सरकारी कर्मचारी अवार्ड, सामाजिक कार्यकर्ता अवार्ड तथा महिला उद्यमी अवार्ड के लिए 21-21 हजार रुपये और लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए 51 हजार रुपये की नकद राशि प्रदान की जाएगी। सभी पुरस्कारों के साथ प्रशस्ति-पत्र भी दिया जाएगा।

ऑनलाइन आवेदन और पात्रता संबंधी जरूरी निर्देश

दूसरी ओर महिला एवं बाल विकास विभाग की डीपीओ नेहा दहिया ने बताया कि पात्र महिलाएं महिला एवं बाल विकास विभाग, हरियाणा के ऑनलाइन पोर्टल एचटीटीपीएस//ओएनएलआईएनई एमआईएसडॉटडब्ल्यूसीडीएचआर वाईडॉटजीओवीडॉटआईएनजीएयू आरएवी पर निर्धारित समयावधि में आवेदन कर सकती हैं। आवेदन की प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन है, इसलिए किसी भी प्रकार का ऑफलाइन आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा। पुरस्कार के लिए आवेदन करने वाली महिला के पास परिवार पहचान पत्र होना अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि आवेदन के साथ निर्धारित प्रारूप में विधिवत हस्ताक्षरित शपथ-पत्र प्रस्तुत करना भी आवश्यक है। इसमें यह घोषणा करनी होगी कि संबंधित संस्था के विरुद्ध किसी भी मंच, विभाग अथवा न्यायालय में कोई प्रतिकूल मामला लंबित नहीं है। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट करना होगा कि भविष्य में यदि दी गई जानकारी गलत पाई जाती है अथवा किसी प्रकार का प्रबंधन सिद्ध होता है, तो पुरस्कार राशि एवं उससे संबंधित मौद्रिक लाभ सरकार को वापस करना होगा।

जिला कार्यक्रम अधिकारी ने पात्र महिलाओं से अपील की कि वे निर्धारित तिथि से पहले आवेदन प्रक्रिया पूरी करें और महिला पुरस्कारों के इस अवसर का लाभ उठाएं। आवेदन प्रक्रिया एवं अन्य जानकारी के लिए लघु सचिवालय में भूतल स्थित जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यालय में संपर्क किया जा सकता है।



ड्रेन्स में केमिकल युक्त और गंदा पानी छोड़ा तो होगी सख्त कार्रवाई :डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों की बैठक में दिए कड़े निर्देश

झज्जर,16 अक्टूबर।

जिला से गुजरने वाली ड्रेन संख्या आठ सहित अन्य ड्रेन्स और रजवाहों में किसी प्रकार का कैमिकल युक्त और सीवरेज का पानी न छोड़ा जाए इसके लिए संबंधित अधिकारी मोनिटरिंग करें और लापरवाही मिलने पर सम्बंधित संस्थानों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। ताकि पानी को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। डीसी वर्षा खांगवाल ने यह निर्देश शुक्रवार को सिंचाई विभाग के अधिकारियों की बैठक में दिए। उन्होंने कहा कि अगर कोई सेप्टिक टैंकर के माध्यम से भी गंदा पानी नालों और ड्रेन में छोड़ते पाया जाता है तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि जिला की सीमा से गुजरने वाली मुंगेशपुर ड्रेन नंबर आठ और केसीबी ड्रेन में कैमिकल युक्त दूषित पानी छोड़ने पर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि जिला की सीमा में दूषित पानी के लिए सीटीपी ना लगाने वाले व्यवसायिक संस्थानों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

किसी भी ड्रेन में गंदे पानी की निकासी न हो इसके लिए संबंधित अधिकारी आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। इस मामले में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

इस मौके पर सिंचाई विभाग एवं जल संसाधन विभाग के अधीक्षण अभियंता सतीश कुमार, कार्यकारी अभियंता खिवलेश भारद्वाज, एसडीओ अजय कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।



जनता की संतुष्टि समाधान शिविरों की सफलता का पैमाना : डीसी



परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 16 अक्टूबर

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि समाधान शिविर जनता की समस्याओं के त्वरित एवं संतोषजनक निवारण के लिए सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक शिकायत को गंभीरता से लेते हुए उसका समयबद्ध समाधान करते किया जाए, साथ ही रिओपन शिकायतों का प्राथमिकता से समाधान सुनिश्चित किया जाए।

डीसी शुक्रवार को लघु सचिवालय सभागार में वीसी उपरांत साप्ताहिक समाधान शिविर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रही थी।

जन शिकायतों के समयबद्ध निस्तारण पर शासन प्रशासन का फोकस

डीसी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देश अनुसार एवं प्रदेश सरकार की जन समस्या निवारण नीति के तहत प्रत्येक सोमवार और गुरुवार को जिला मुख्यालय के साथ-साथ सभी उपमंडल स्तरों पर नियमित रूप से समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों का उद्देश्य नागरिकों की शिकायतों का एक ही मंच पर त्वरित, पारदर्शी एवं संतोषजनक समाधान सुनिश्चित करना है। शिविरों में प्राप्त शिकायतों की नियमित समीक्षा कर उनके समयबद्ध निस्तारण पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

शिकायत के समाधान के उपरांत एटीआर पोर्टल पर हो अपलोड

डीसी वर्षा खांगवाल ने विभागवार प्राप्त शिकायतों की विस्तृत समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों से मौके पर ही प्रगति की जानकारी ली और आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए। उन्होंने स्पष्ट किया कि शिकायत के समाधान के उपरांत एटीआर (एक्शन टेकन रिपोर्ट) बिना किसी विलंब के संबंधित पोर्टल एवं कार्यालय को भेजी जाए। उन्होंने कहा कि समाधान शिविरों का मूल उद्देश्य जनता की समस्याओं का शीघ्र, पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण समाधान है, जिसे प्रत्येक अधिकारी अपनी जिम्मेदारी समझते हुए पूरा करे। उन्होंने कहा कि सभी विभागाध्यक्ष प्रतिदिन अपने विभाग से जुड़ी प्राप्त समस्याओं का रिव्यू करें।

डीसी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि समाधान शिविरों में आने वाले प्रत्येक फरियादी के साथ संवेदनशील व्यवहार किया जाए तथा किसी भी शिकायत को अनावश्यक रूप से लंबित रखने के बजाय निर्धारित समय सीमा के भीतर उसका प्रभावी समाधान सुनिश्चित किया जाए। साथ ही विभागों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किया जाए।

यह रहे मौजूद

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर रवि मीणा, सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट, सीटीएम ऋतु सहित सभी विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

बच्चों की निजता और गरिमा की रक्षा के लिए आयोग प्रतिबद्ध : तृप्ति श्योराण

बाल देखभाल संस्थानों में बच्चों की निजता और सुरक्षा के लिए सीसीटीवी व्यवस्था पर वैधानिक परामर्श जारी

हरियाणा राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष तृप्ति श्योराण ने जारी किए निर्देश

निजी मोबाइल और लैपटॉप से निगरानी व्यवस्था जोड़ने पर प्रतिबंध, फुटेज के अनधिकृत प्रसार पर होगी कार्रवाई

झज्जर, 16 अक्टूबर।

हरियाणा राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष तृप्ति श्योराण ने बाल देखभाल संस्थानों में रह रहे बच्चों की निजता, गरिमा और सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सीसीटीवी व्यवस्था को लेकर वैधानिक परामर्श जारी किया है। इसमें निगरानी व्यवस्था के संचालन, चित्रों एवं दृश्य सामग्री के सुरक्षित भंडारण तथा उन तक केवल अधिकृत व्यक्तियों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

उन्होंने बताया कि आयोग ने अपने निरीक्षणों के दौरान पाया कि कुछ संस्थानों में सीसीटीवी व्यवस्था को व्यक्तिगत मोबाइल फोन और लैपटॉप से जोड़ा गया है। ऐसी व्यवस्था के कारण निगरानी के सीधे प्रसारण को दूर से देखने, दृश्य सामग्री को डाउनलोड करने और अनधिकृत रूप से साझा करने का खतरा बना रहता है। इससे बच्चों की निजता और सुरक्षा प्रभावित हो सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए आयोग ने निगरानी व्यवस्था को सुरक्षित बनाने पर विशेष जोर दिया है।

केवल अधिकृत कर्मचारियों को मिलेगी दृश्य सामग्री तक पहुंच

उन्होंने बताया कि वैधानिक परामर्श के अनुसार, सीसीटीवी व्यवस्था, उसकी दृश्य सामग्री और कूटशब्द पर संबंधित संस्थान के प्रभारी का नियंत्रण रहेगा। केवल अधिकृत कर्मचारियों को ही सीधे प्रसारण और पहले से दर्ज दृश्य सामग्री को देखने की अनुमति होगी। साझा कूटशब्द के उपयोग पर रोक रहेगी तथा निगरानी व्यवस्था को निजी मोबाइल फोन और लैपटॉप से जोड़ना प्रतिबंधित होगा। इसके साथ ही दूरस्थ पहुंच की सुविधा सामान्य रूप से बंद रखने के निर्देश दिए गए हैं।

दृश्य सामग्री की नकल और प्रसार पर रोक

आयोग ने निगरानी यंत्र के पर्दे की तस्वीर खींचने, पर्दे की गतिविधियों की अभिलेखबद्ध प्रतिलिपि बनाने, दृश्य सामग्री को डाउनलोड या नकल करने तथा उसे संदेश सेवाओं, सामाजिक माध्यमों या ईमेल के जरिए प्रसारित करने पर रोक लगाई है। दृश्य सामग्री को दर्ज करने और सुरक्षित रखने वाले उपकरणों को सुरक्षित स्थान पर रखने, कूटशब्द समय-समय पर बदलने तथा पहुंच संबंधी अभिलेखों की नियमित जांच करने के निर्देश भी दिए गए हैं। किसी घटना से संबंधित दृश्य सामग्री को आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी होने तक सुरक्षित रखने पर जोर दिया गया है।



शौचालय और स्नानघर में कैमरे लगाना प्रतिबंधित

आयोग की अध्यक्ष तृप्ति श्योराण ने बताया कि बच्चों की निजता और गरिमा की रक्षा के लिए शौचालय, स्नानघर तथा कपड़े बदलने वाले स्थानों के अंदर निगरानी कैमरे लगाना पूरी तरह प्रतिबंधित है। आयोग ने किशोर न्याय आदर्श नियम, 2016 के नियम 67(12) के प्रावधानों का पालन सुनिश्चित करने पर जोर दिया है। प्रत्येक बाल देखभाल संस्थान को अधिकृत उपयोगकर्ताओं का अभिलेख और दृश्य सामग्री प्राप्त करने का पंजिका भी रखनी होगी। इसमें तारीख, उद्देश्य और सामग्री प्राप्त करने वाले व्यक्ति का विवरण दर्ज करना अनिवार्य होगा।

15 दिन में अनुपालना रिपोर्ट देने के निर्देश

उन्होंने बताया कि आयोग ने महिला एवं बाल विकास विभाग, हरियाणा, सभी संबंधित जिला अधिकारियों और जिला बाल संरक्षण अधिकारियों को वैधानिक परामर्श के प्रावधानों का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। विभाग को सभी संबंधित अधिकारियों और बाल देखभाल संस्थानों को सुरक्षा उपाय लागू करने के लिए लिखित निर्देश जारी करने को कहा गया है। आयोग ने 15 दिन के भीतर अनुपालना रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश भी दिए हैं। उन्होंने बताया कि निरीक्षण के दौरान यह जांच की जाएगी कि निगरानी व्यवस्था से कौन-कौन से उपकरण जुड़े हैं, सीधे प्रसारण और दर्ज दृश्य सामग्री तक किन व्यक्तियों की पहुंच है, कूटशब्द कितने सुरक्षित हैं, दूरस्थ पहुंच की सुविधा बंद है या नहीं तथा दर्ज सामग्री का सुरक्षित भंडारण और संरक्षण किया जा रहा है या नहीं। विशेष रूप से बालिकाओं के लिए संचालित संस्थानों में सुरक्षा संबंधी प्रावधानों के पालन पर भी ध्यान दिया जाएगा। किसी भी कमी को तत्काल दूर करने और नियमों के अनुसार जिम्मेदारी तय करने के निर्देश दिए गए हैं।

बच्चों के सर्वोत्तम हित में सुरक्षा उपाय अनिवार्य

आयोग की अध्यक्ष ने स्पष्ट किया कि बाल देखभाल संस्थानों में निगरानी कैमरे लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी दृश्य सामग्री के उपयोग, भंडारण और प्रसार को नियंत्रित करने के लिए प्रभावी सुरक्षा उपाय भी जरूरी हैं। निगरानी व्यवस्था का उद्देश्य संस्थागत सुरक्षा और बाल संरक्षण होना चाहिए, न कि बच्चों की गतिविधियों या उनके ठिकाने की जानकारी अनधिकृत व्यक्तियों तक पहुंचाना। उन्होंने बताया कि आयोग ने सभी संबंधित संस्थानों में इन निर्देशों को लागू करने, नियमित निगरानी करने और अनुपालना के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करने पर बल दिया है। यह वैधानिक परामर्श बच्चों के सर्वोत्तम हितों तथा उनकी निजता, गरिमा और सुरक्षा की रक्षा के उद्देश्य से जारी किया गया है।

वोटर से प्राप्त दावे आपत्तियों का तत्काल निपटान करें अधिकारी : डीसी



आगामी 28 अक्टूबर तक होगा दावे आपत्तियों का निपटारा, 6 नवम्बर को होगा अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों को दिए निर्देश

झज्जर, 16 अक्टूबर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला झज्जर के सभी चारों विधानसभा क्षेत्रों में एसआईआर-2026 के तहत मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य जारी है। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने कहा कि अभियान का उद्देश्य प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल करना तथा अपात्र नामों को हटाकर सूची को शुद्ध एवं अद्यतन बनाना है। डीसी ने बताया कि एसआईआर-2026 के कार्यक्रम के अनुसार दावे एवं आपत्तियों का निपटारा 28 अक्टूबर तक होगा तथा अंतिम मतदाता सूची 6 नवंबर को प्रकाशित की जाएगी। मतदाता नाम, पता, आयु, फोटो सहित अन्य विवरणों की जांच कर त्रुटि मिलने पर समय रहते सुधार सम्भव है। डीसी ने कहा कि मतदाता सूची को शुद्ध एवं विश्वसनीय बनाने में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। उन्होंने सभी निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों को एसआईआर प्रक्रिया नियमानुसार पूरी करने के निर्देश दिए हैं।

परिवहन विशेष - न्याय विशेष - जन-अधिकार विशेष - सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला

सुंदरगढ़ में 70.15 एमएलडी गंदा पानी रोज नदियों और नालों के हवाले, चार शहरी निकायों की व्यवस्था पर गंभीर सवाल



राउरकेला में 40 एमएलडी क्षमता का एसटीपी भी नहीं संभाल पा रहा पूरा भार, तीन नगरपालिकाओं में भूमिगत सीवरेज का अभाव ; ब्राह्मणी और इब नदी के साथ जनस्वास्थ्य पर मंडराता खतरा

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

औद्योगिक विकास और शहरी विस्तार की पहचान रखने वाले सुंदरगढ़ जिले में अपशिष्ट जल प्रबंधन की बदहाल तस्वीर विकास के दावों के सामने गंभीर सवाल खड़े कर रही है। राउरकेला महानगर निगम (आरएमसी) सहित सुंदरगढ़, बिरमित्रपुर और राजगांगपुर के चार शहरी निकायों से प्रतिदिन करीब *70.15 मिलियन लीटर गंदा पानी* निकलता है। इसके समुचित शोधन और निस्तारण की व्यवस्था अधूरी होने के कारण दूषित जल नदियों, नालों और दूसरे जलस्रोतों तक पहुंच रहा है। इसका सीधा असर पर्यावरण, स्वच्छता और नागरिकों के स्वास्थ्य पर पड़ने की आशंका है।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, राउरकेला महानगर निगम क्षेत्र में प्रतिदिन 44.95 एमएलडी अपशिष्ट जल उत्पन्न होता है। बालूघाट के रुपुटोला में 40 एमएलडी क्षमता वाला सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) चालू है, लेकिन शहर के सभी घरों को सीवरेज नेटवर्क से नहीं जोड़ा जा सका है। नतीजतन, संयंत्र की उपलब्ध क्षमता के बावजूद पूरे शहर के अपशिष्ट जल का प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित नहीं हो पा रहा है।

दूसरी ओर, बिरमित्रपुर में प्रतिदिन 5.60 एमएलडी, राजगांगपुर में 10 एमएलडी और सुंदरगढ़ शहर में 9.60 एमएलडी गंदा पानी निकलता है। इन तीनों नगरपालिकाओं में व्यापक भूमिगत सीवरेज पाइपलाइन व्यवस्था के अभाव में सेप्टिक टैंक, नालियों और विकेंद्रीकृत स्वच्छता प्रणालियों पर निर्भरता बनी हुई है। यह व्यवस्था बढ़ती शहरी जरूरतों के मुकाबले अपर्याप्त साबित हो रही है।

सबसे चिंताजनक स्थिति तब बनती है, जब बिना समुचित शोधन के गंदा पानी प्राकृतिक जलस्रोतों में पहुंचता है या बस्तियों के आसपास जमा रहता है। इससे जल प्रदूषण, दुर्गंध, मच्छरों के प्रजनन और डेंगू-मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। दूषित जल का लगातार प्रवाह जलीय पारिस्थितिकी के लिए भी चुनौती है।

अब सवाल केवल गंदे पानी की निकासी का नहीं, बल्कि प्रशासनिक जवाबदेही का है। चारों शहरी निकायों को सीवरेज कनेक्शन, उपचार क्षमता, नियमित निगरानी और सुरक्षित निस्तारण की समयबद्ध योजना पर काम करना होगा। अन्यथा शहरी विकास की कीमत नदियों की सेहत और नागरिकों के स्वास्थ्य को चुकानी पड़ेगी।

जापान में आयोजित एशियाई गेम के सभी 85 भारतीय मेडलिस्टो को प्रधानमंत्री मोदी ने दी बधाई



स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली
परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

नई दिल्ली। मेजर ध्यानचंद स्टेडियम नई दिल्ली में आयोजित एक सम्मान समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी 85 पदक विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी तथा भविष्य के अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में और बेहतर प्रदर्शन के लिए उन्हें प्रोत्साहन एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि हमारे खिलाड़ी पूरी मेहनत एवं लगन से भारत को मेडल दिलाने में अपना अमूल्य योगदान दिया हैं, उनकी खेल प्रतिभा से विश्व में भारत का मान बढ़ा है।उन्होंने खिलाड़ियों से अपील की कि 2028 में यूएस में आयोजित होने वाली ओलंपिक गेम्स में भारतीय खिलाड़ी और बेहतर प्रदर्शन के साथ अधिक से अधिक मेडल जीतकर देश का गौरव बढ़ाएगे। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उनकी इच्छा है कि 2036 में भारत में ओलंपिक गेम्स का आयोजन हो और इसके लिए वह प्रयास करेंगे।इस अवसर पर जापान में आयोजित एशियन गेम्स के चीफ प्रोटोकोल ऑफीसर एवं सेपक टकराव फेडरेशन ऑफ इंडिया के प्रथम जॉइंट जनरल सेक्रेटरी पेरिका सुरेश भी उपस्थित रहे।श्री सुरेश ने एशियन गेम्स का अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि भारतीय खिलाड़ी प्रतिभावान एवं काफी संघर्षशील है उनकी मजबूत इच्छा शक्ति एवं विभिन्न खेलों में बेहतर प्रदर्शन के कारण भारत ने 85 मेडल जीतकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

दुनिया में युद्ध का तांडव ! तेल पर छिड़ी वैश्विक जंग, भारत का विंडफॉल टैक्स वाला दांव

युद्ध, तेल और टैक्स : दुनिया की अर्थव्यवस्था का अग्निपरीक्षा काल

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया। वैश्विक ऊर्जा बाजार में आज युद्ध, तेल की आपूर्ति, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक सुरक्षा का ऐसा त्रिकोण बन रहा है, जिसका असर भारत जैसे बड़े तेल आयातक देश पर सीधे पड़ रहा है। एक ओर पश्चिम एशिया में बढ़ता सैन्य तनाव, दूसरी ओर सऊदी अरब के हवाई अड्डों और ऊर्जा प्रतिष्ठानों पर हमलों की खबरें, और तीसरी ओर भारत सरकार का पेट्रोल एवं डीजल निर्यात शुल्क में बड़ा बदलाव — ये तीनों घटनाएं बताती हैं कि तेल अब केवल व्यापार की वस्तु नहीं, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता का आधार है।

1. सऊदी अरब पर हूती हमले — ऊर्जा संकट की आहट ?

- यमन के हूती संगठन और सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच तनाव बढ़ा, मिसाइल और ड्रोन हमलों की खबरें

- 15 अक्टूबर की रिपोर्ट: यमन के अदन स्थित अल-मआशिक राष्ट्रपति परिसर के आसपास हमला — यह यमन के राष्ट्रपति परिसर से संबंधित है, न कि सऊदी अरब के राष्ट्रपति भवन से

- सऊदी अरब में हवाई अड्डों और सामरिक प्रतिष्ठानों पर हमलों तथा तेल सुविधाओं को लेकर खतरे की खबरों ने चिंता बढ़ाई

- सऊदी अरब वैश्विक तेल आपूर्ति का प्रमुख केंद्र है — उत्पादन, रिफाइनरी, बंदरगाह या होर्मुज जलडमरूमध्य में बाधा आई तो कच्चे तेल की कीमतें बढ़ सकती हैं

- हालांकि इसका अर्थ यह नहीं कि सऊदी का पूरा उत्पादन बंद हो गया है — असर अवधि, क्षति, वैकल्पिक आपूर्ति और भंडार पर निर्भर करेगा

- भारत के लिए चुनौती: भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात करता है। तेल महंगा हुआ तो आयात बिल, रुपया, परिवहन लागत और महंगाई पर दबाव बढ़ेगा

2. विंडफॉल टैक्स क्या है ? — आसान भाषा में

विंडफॉल टैक्स का अर्थ है — असाधारण परिस्थितियों में कंपनियों को होने वाले अप्रत्याशित अतिरिक्त मुनाफे पर कर।

युद्ध या आपूर्ति संकट से अंतरराष्ट्रीय बाजार में पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतें बढ़ जाएं और कंपनी को सामान्य से बहुत अधिक लाभ मिलने लगे, तो सरकार उस अतिरिक्त लाभ के एक हिस्से पर कर लगाती है।

तकनीकी स्पष्टीकरण: भारत में पेट्रोल-डीजल निर्यात पर लागू शुल्क को समाचारों में विंडफॉल टैक्स कहा जा रहा है, लेकिन यह विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (SAED) तथा अन्य उपकरों के माध्यम से निर्धारित होता है। यह हर कंपनी के वास्तविक मुनाफे की गणना करके नहीं, बल्कि निर्धारित प्रति-लीटर दर पर लागू होता है।

3. 16 अक्टूबर 2026 से लागू नई दरें — बड़ा उलटफेर

केंद्र सरकार ने 15 अक्टूबर की देर रात आदेश जारी कर 16 अक्टूबर 2026 से दरें बदलीं:

ईंधन	*पुरानी दर*	*नई दर*	*बदलाव*
पेट्रोल निर्यात शुल्क			
	₹0.50 / लीटर	₹2.50 / लीटर	*+₹2.00 (5 गुना वृद्धि)*
डीजल निर्यात शुल्क			
	₹16.00 / लीटर	₹8.50 / लीटर	*-₹7.50 प्रति लीटर कटौती*

- पेट्रोल पर शुल्क पांच गुना हुआ — विदेश में पेट्रोल बेचना महंगा होगा

- डीजल पर शुल्क घटा — निर्यात पर कर-भार कम होगा

- यह केवल कर बढ़ाने का फैसला नहीं, दोनों ईंधनों के लिए अलग-अलग दिशा में नीतिगत बदलाव है

4. सरकार विंडफॉल टैक्स क्यों लगाती है ? — तीन प्रमुख उद्देश्य

1. घरेलू ऊर्जा सुरक्षा: अंतरराष्ट्रीय कीमतें आकर्षक हों तो कंपनियां निर्यात करना चाहेंगी। निर्यात शुल्क उस लाभ को प्रभावित कर घरेलू आपूर्ति बनाए रखने का प्रयास है।

2. सरकारी राजस्व: अतिरिक्त शुल्क से राजस्व मिलता है, जिसे सार्वजनिक सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह हर रुपया सीधे पेट्रोल-डीजल सब्सिडी में नहीं जाता।

3. असाधारण लाभ और सार्वजनिक हित में संतुलन: संकट के समय असामान्य लाभ का कुछ हिस्सा सार्वजनिक राजस्व में लाना — असमानता घटाने में अप्रत्यक्ष सहायता, लेकिन केवल विंडफॉल टैक्स से असमानता समाप्त नहीं होती।

5. हर 15 दिन में समीक्षा — भारत की नीति कैसे काम करती है ?

- भारत ने जुलाई 2022 में अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा कीमतों में तेजी के बीच ऐसे शुल्क शुरू किए थे, 2024 में हटाए गए, 2026 में फिर लागू

- दरों की लगभग हर पखवाड़े समीक्षा होती है — कच्चे तेल की कीमत, निर्यात की स्थिति और घरेलू जरूरत के आधार पर

- ब्रिटेन ने 2022 में ऊर्जा लाभ लेवी लागू की थी, EU ने भी अस्थायी योगदान की व्यवस्था की थी — लेकिन दरें और कानूनी आधार भारत से भिन्न हैं

6. क्या आम आदमी की जेब पर पड़ेगा असर ?

सीधा असर नहीं: यह बदलाव निर्यात शुल्क है, घरेलू पेट्रोल पंप की कीमतों में स्वतः बदलाव नहीं। 16 अक्टूबर को पेट्रोल खरीदने पर नागरिक को तत्काल ₹2.50 अतिरिक्त नहीं देना पड़ेगा, और डीजल पंप पर ₹7.50 सस्ता नहीं होगा।

अप्रत्यक्ष असर संभव है:

- वैश्विक तेल कीमतें लंबे समय तक ऊंची रहीं तो परिवहन, माल ढुलाई, विनिर्माण और खाद्य वस्तुओं की लागत बढ़ सकती है

- घरेलू आपूर्ति स्थिर रही और अंतरराष्ट्रीय कीमतें घटीं तो राहत मिल सकती है

7. सऊदी अरब में उड़ानों पर रोक — युद्ध का असर हवाई यातायात तक

- एयर इंडिया ने रियाद, दम्माम और जेद्दा से आने-जाने वाली उड़ानों का निलंबन 20 अक्टूबर 2026 तक बढ़ाया

- इंडिगो और अकासा एयर ने कुछ सऊदी मार्गों पर 17 अक्टूबर तक निलंबन/रद्दीकरण की घोषणा की

- ये एयरलाइनों के सुरक्षा-आधारित परिचालन निर्णय हैं, भारत सरकार द्वारा सभी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर लगाई गई एक समान रोक नहीं

- यात्रियों को उड़ान की स्थिति एयरलाइन से पुष्टि करनी चाहिए

निष्कर्ष — तेल की हर बूंद अब अर्थव्यवस्था और सुरक्षा से जुड़ी है

> तेल की हर बूंद अब अर्थव्यवस्था और सुरक्षा से जुड़ी है।

> पेट्रोल निर्यात शुल्क में पांच गुना वृद्धि और डीजल में ₹7.50 की कटौती — इसी बदलते परिदृश्य का हिस्सा है। विंडफॉल टैक्स अपने आप में न तो संकट का पूर्ण समाधान है और न ही महंगाई से सुरक्षा की गारंटी।



नव श्री केशव रामलीला कमेटी : छठे दिन मंचन में स्वर्ण मृग देख मोहित हुई सीता, रावण ने छल से किया हरण





परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: राजधानी दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, सेक्टर 11 के सामने भगवान गणेश के आहवान के साथ ही दस दिन तक चलने वाली नव श्री केशव रामलीला कमेटी के छठें दिन सीता हरण व रावण दरबार के मंचन को लोगों ने जमकर आनंद उठाया। लोगों ने अपने स्थान पर खड़े होकर इन कलाकारों का जोरदार तालियों से इनका हौसला बढ़ाया।

मंचन के दौरान पंचवटी में राम, सीता व लक्ष्मण का निवास, स्वर्ण मृग का प्रकट होना, सीता का मोह व उसके बाद घटित होने वाली घटनाओं को इतनी जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया गया कि दर्शक भावुक हो उठे। रावण की दमदार भूमिका निभाने वाले कलाकार को दर्शकों ने खूब सराहा। सीता के वियोग में भगवान श्रीराम के विलाप के दृश्य ने वातावरण को मार्मिक बना दिया व श्रद्धालु भावविभोर हो गए। रामलीला मंचन की शुरुआत पंचवटी के सुंदर दृश्य से हुई, जहां माता सीता स्वर्ण मृग को देखकर प्रसन्न हो उठती है व उसकी छाल लाने का आग्रह भगवान श्रीराम से करती है। आदेष मानकर भगवान राम स्वर्ण मृग की पीछा करते हुए वन में चले जाते है। तभी अवसर का लाभ उठाकर लंकापति रावण साधु के वेश में कुटिया पर आता है और माता सीता से भिक्षा मांगने का छल करता है जैसे ही सीता लक्ष्मण रेखा लांघती हैं, रावण उनका हरण कर पुष्पक विमान से लंका की और उड़ जाता है। आज टीवी कलाकार वरुण कस्तूरिया जैसे ही स्टेज पर आए उपस्थित लोगों ने जोरदार तालियों से उनका स्वागत किया। संस्था के सभी सदस्यों द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर संस्था के प्रेरणा स्तोत्र व दिल्ली के महापौर प्रवेश वाही, चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी, अध्यक्ष जय किशन बंसल, एडिशनल चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता, महामंत्री कृष्ण जिंदल, कोषाध्यक्ष दिनेश सर्राफ, लीला महामंत्री हरि किशन मित्तल, कार्यालय महामंत्री पुरुषोतम लाल सिंघल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। संस्था द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम का यह 30वां वर्ष है।

हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (HSRP) के बिना वाहन चलाने वालों पर होगी कार्रवाई, विशेष अभियान चलाकर काटे जाएंगे चालान : एसपी सिद्धान्त जैन

पुलिस महानिदेशक श्री अजय सिंघल के आदेशानुसार हिसार पुलिस ने वाहन चालकों से की अनिवार्य रूप से हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट लगवाने की अपील

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)। पुलिस महानिदेशक हरियाणा अजय सिंघल के आदेशानुसार एवं पुलिस अधीक्षक हिसार सिद्धान्त जैन के नेतृत्व में हिसार पुलिस द्वारा वाहनों पर हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (HSRP) की अनिवार्यता सुनिश्चित करने के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा। अभियान के दौरान बिना हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट के चलने वाले वाहनों की जांच की जाएगी और नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर संबंधित वाहन मालिकों के चालान किए जाएंगे।

पुलिस अधीक्षक हिसार ने वाहन चालकों से अपील की है कि वे अपने वाहनों पर नियमानुसार हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट लगवाकर ही वाहन का प्रयोग करें। वाहन मालिक यह सुनिश्चित करें कि उनके वाहन पर निर्धारित मानकों के अनुरूप नंबर प्लेट लगी हो और वह स्पष्ट रूप से पढ़ने योग्य हो।

हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट वाहनों की पहचान सुनिश्चित करने तथा यातायात नियमों के पालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए वाहन मालिक इस संबंध में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें और समय रहते अपने वाहनों पर निर्धारित नंबर प्लेट लगवाएं।

एसपी हिसार ने स्पष्ट किया कि यातायात नियमों की पालना सुनिश्चित करने के लिए विशेष जांच अभियान के दौरान नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।



सभी वाहन चालक यातायात नियमों का पालन करें और पुलिस प्रशासन का सहयोग करें।

अवसरों की पहचान और सही चुनाव की कला



● डॉ. विजय गर्ग

हर अवसर का लाभ उठाना आवश्यक नहीं होता। कुछ अवसर तत्काल लाभ का वादा करते हैं, लेकिन उनका दीर्घकालीन महत्त्व बहुत कम होता है। इसके विपरीत, कुछ अवसर धैर्य, परिश्रम और साहस की माँग करते हैं, लेकिन भविष्य में बेहतर परिणाम देते हैं। सफलता की पहली सीढ़ी अपनी क्षमताओं, रुचियों, मूल्यों और दीर्घकालीन लक्ष्यों को समझना है।



जीवन हमें अनगिनत अवसर प्रदान करता है, लेकिन सफलता केवल अवसरों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती। यह इस बात पर निर्भर करती है कि हम उन अवसरों को कितनी अच्छी तरह पहचानते हैं, उनकी संभावनाओं का आकलन करते हैं और सही समय पर उचित निर्णय लेते हैं। अवसर अक्सर अप्रत्याशित रूपों में सामने आते हैं। कुछ आकर्षक संभावनाओं के रूप में आते हैं, तो कुछ चुनौतियों, असफलताओं और कठिन परिस्थितियों के बीच छिपे होते हैं। सार्थक अवसर और क्षणिक आकर्षण के बीच अंतर करना जीवन का एक महत्त्वपूर्ण कौशल है।

सही अवसर की पहचान

हर अवसर का लाभ उठाना आवश्यक नहीं होता। कुछ अवसर तत्काल लाभ का वादा करते हैं, लेकिन उनका दीर्घकालीन महत्त्व बहुत कम होता है। इसके विपरीत, कुछ अवसर धैर्य, परिश्रम और साहस की माँग करते हैं, लेकिन भविष्य में बेहतर परिणाम देते हैं। सफलता की पहली सीढ़ी अपनी क्षमताओं, रुचियों, मूल्यों और दीर्घकालीन लक्ष्यों को समझना है।

सही अवसर वही है, जो हमारी योग्यताओं के अनुकूल हो, हमारे व्यक्तित्व का विकास करे और हमें अपने उद्देश्यों के करीब ले जाए। विशेष रूप से युवाओं को लोकप्रियता, सामाजिक दबाव और तात्कालिक आर्थिक लाभ से प्रभावित होकर निर्णय लेने के बजाय दूरगामी परिणामों पर ध्यान देना चाहिए। सही निर्णय हमेशा सबसे आसान नहीं होता; कई बार वही निर्णय बेहतर भविष्य की नींव रखता है, जिसके लिए अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ती है।

सही समय पर निर्णय लेने का महत्त्व

किसी अवसर का पूरा लाभ उठाने में समय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि हम बहुत अधिक देर तक निर्णय लेने में हिचकिचाते रहें, तो एक अच्छा अवसर हाथ से निकल सकता है। दूसरी ओर, जल्दबाजी में लिया गया निर्णय अनावश्यक कठिनाइयाँ पैदा कर सकता है। इसलिए विचारपूर्ण विश्लेषण और समय पर कार्रवाई के बीच संतुलन आवश्यक है।

कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले हमें संबंधित जानकारी जुटानी चाहिए, संभावित परिणामों पर विचार करना चाहिए, जोखिमों का आकलन करना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर अनुभवी लोगों से सलाह लेनी चाहिए। हालाँकि, किसी निर्णय पर अत्यधिक विचार करते रहना भी बाधा बन सकता है। जब पर्याप्त जानकारी उपलब्ध हो जाए, तो आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

चुनौतियों को अवसरों में बदलना

जीवन के कुछ सबसे बड़े अवसर कठिन परिस्थितियों से जन्म लेते हैं। असफलता ऐसे सबक सिखा सकती है, जो कभी-कभी सफलता भी नहीं सिखा पाती। अस्वीकृति हमें अपनी क्षमताओं में सुधार करने के लिए प्रेरित कर सकती है, जबकि अप्रत्याशित परिवर्तन नई संभावनाओं के द्वार खोल सकते हैं।

सकारात्मक दृष्टिकोण हमें कठिनाइयों को केवल बाधा के रूप में देखने के बजाय उनसे सीखने और स्वयं को बेहतर बनाने का अवसर प्रदान करता है। अनेक सफल व्यक्तियों ने धैर्य, रचनात्मकता और दृढ़ संकल्प के बल पर असफलताओं को सफलता की सीढ़ियों में बदला है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक कठिनाई अपने आप सफलता में बदल जाती है। वास्तविक महत्त्व इस बात का है कि हम परिस्थितियों से सीखें, अपनी रणनीतियों में आवश्यक बदलाव करें और आगे बढ़ने के रचनात्मक रास्ते खोजें।

अवसर खोने के भय से बचें

डिजिटल युग में लोग लगातार दूसरों की उपलब्धियों, जीवनशैली और अवसरों से परिचित होते रहते हैं। सोशल मीडिया कई बार यह भ्रम पैदा करता है कि दूसरे लोग हमसे अधिक तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और अधिक सफल जीवन जी रहे हैं। इससे जल्दबाजी में निर्णय लेने और अनावश्यक प्रतिस्पर्धा करने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है।

हमें समझना चाहिए कि जो अवसर एक व्यक्ति के लिए उपयुक्त है, वह दूसरे के लिए भी उपयुक्त हो, यह आवश्यक नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियाँ, जिम्मेदारियाँ, क्षमताएँ और आकांक्षाएँ अलग-अलग होती हैं। अपनी यात्रा की तुलना दूसरों की उपलब्धियों से करने पर हम अपने वास्तविक लक्ष्यों से भटक सकते हैं।

समझदारी इसी में है कि हम बाहरी अपेक्षाओं के बजाय अपने उद्देश्यों के आधार पर अवसरों का मूल्यांकन करें। किसी अनुपयुक्त अवसर को अस्वीकार करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना किसी अच्छे अवसर को स्वीकार करना।

तैयारी से बनते हैं अवसर

किसी अवसर को पहचान लेना केवल आधा काम है; उसका लाभ उठाने के लिए तैयार रहना भी उतना ही आवश्यक है। ज्ञान, व्यावहारिक कौशल, अनुशासन, आत्मविश्वास और निरंतर सीखने की प्रवृत्ति हमें संभावनाओं को उपलब्धियों में बदलने में सहायता करती है।

जो विद्यार्थी संचार कौशल, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मकता और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करते हैं, वे उभरते अवसरों का बेहतर लाभ उठा सकते हैं। इसी प्रकार, बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने और नई चीजें सीखने के लिए तैयार रहने वाले पेशेवर भी अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ सकते हैं।

किस्मत कभी-कभी अवसर का द्वार खोल सकती है, लेकिन तैयारी ही हमें उस अवसर का अधिकतम लाभ उठाने योग्य बनाती है।

निष्कर्ष

अवसरों की पहचान और सही चुनाव की कला जागरूकता, विवेक, साहस और जिम्मेदारी के समन्वय में निहित है। हमें आकर्षक और वास्तव में उपयोगी चीजों के बीच, क्षणिक उत्साह और स्थायी लाभ के बीच तथा भय से उत्पन्न हिचकिचाहट और विचारपूर्ण सावधानी के बीच अंतर करना सीखना चाहिए।

जीवन हमेशा दूसरा अवसर नहीं देता, लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि प्रत्येक अवसर को तुरंत स्वीकार कर लिया जाए। महत्त्वपूर्ण यह है कि हम सजग रहें, निरंतर सीखते रहें, विवेकपूर्ण विचार करें और उचित समय आने पर आत्मविश्वास के साथ कदम उठाएँ।

अंततः सफलता इस बात में नहीं है कि हम सामने आने वाले हर अवसर को स्वीकार कर लें, बल्कि इस बात में है कि हम सही अवसर को पहचानें और उसे सार्थक उपलब्धि में बदलने के लिए साहस, तैयारी तथा दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें।



गरीबी मुक्त भारत : सपनों से संकल्प तक (17 अक्टूबर अंतरराष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस पर विशेष आलेख)।

-सुनील कुमार महला।

गरीबी, भुखमरी, असमानता और सामाजिक बहिष्कार को समाप्त करने के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 17 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस मनाया जाता है। यहां इस आलेख में सबसे पहले हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि आखिर गरीबी से तात्पर्य या मतलब क्या है? तो इसका सीधा सा उत्तर यह है कि गरीबी वह स्थिति है, जिसमें कोई व्यक्ति या परिवार भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं जुटा पाता। दूसरे शब्दों में कहें तो गरीबी केवल धन की कमी नहीं है, बल्कि यह सम्मानजनक जीवन जीने, समान अवसर पाने और समाज की मुख्यधारा में शामिल होने की क्षमता को भी प्रभावित करती है। यहां निष्कर्ष के तौर पर यह बात कही जा सकती है कि गरीबी केवल धन का अभाव नहीं, बल्कि बुनियादी सुविधाओं, अवसरों, अधिकारों और सम्मानजनक जीवन से वंचित होने की स्थिति भी है। वास्तव में सच तो यह है कि गरीबी का प्रभाव व्यक्ति के साथ-साथ उसके परिवार, बच्चों और आने वाली पीढ़ियों पर भी पड़ता है।

देश और समाज के लिए गंभीर चुनौती: गरीबी - बहरहाल, यहां पर यह कहना ग़लत नहीं होगा कि गरीबी, भुखमरी, असमानता और सामाजिक बहिष्कार आज भी हमारे समाज में विद्यमान गंभीर चुनौतियाँ है। गरीबी के कारण लाखों लोग भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित रह जाते है। वहीं पर भुखमरी और कुपोषण बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास को प्रभावित करते है, जबकि आर्थिक और सामाजिक असमानता अवसरों तक समान पहुँच में बाधा बनती है। सामाजिक बहिष्कार के कारण वंचित वर्ग के लोग समाज की मुख्यधारा से दूर रह जाते है। वास्तव में, इन समस्याओं का समाधान केवल सरकारी योजनाओं से नहीं, बल्कि समान अवसर, सामाजिक न्याय, जागरूकता और सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। एक समतामूलक समाज वही है, जहाँ किसी व्यक्ति की पहचान उसकी गरीबी नहीं, बल्कि उसकी प्रतिभा और मानवीय गरिमा से हो। विश्व और भारत में गरीबी आज भी एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक चुनौती है। आंकड़ों की बात करें तो विश्व बैंक के सितंबर 2026 के अनुमान के अनुसार, वर्ष 2024 में दुनिया के लगभग 82.43 करोड़ लोग अत्यधिक गरीबी में जीवनयापन कर रहे थे। भारत में विश्व बैंक की 3 डॉलर प्रतिदिन की अंतरराष्ट्रीय गरीबी-रेखा के आधार पर वर्ष 2022–23 में अत्यधिक गरीबी की दर 5.3 प्रतिशत थी। वहीं, नीति आयोग के अनुसार, भारत में बहुआयामी गरीबी की दर 2022–23 में अनुमानतः 11.28 प्रतिशत रही। ये आँकड़े गरीबी में आई कमी को दर्शाते है, लेकिन भोजन, पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन के समान अवसर सुनिश्चित करने की चुनौती अब भी बनी हुई है। आंकड़े बताते है कि भारत में लगभग 25 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए। यहां पाठकों को बताता चलूं कि (नीति आयोग के अनुमानों के अनुसार) वर्ष 2013–14 से 2022–23 के दौरान भारत में लगभग 24.82 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए। इस अवधि में बहुआयामी गरीबी की दर 29.17 प्रतिशत से घटकर 11.28 प्रतिशत रह गई।

सरकार द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिए किए जा रहे प्रमुख प्रयासः-

खैर फिलहाल यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि भारत में गरीबी कम करने के लिए सरकार खाद्य सुरक्षा, रोजगार, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास और महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर एक साथ काम कर रही है और यही कारण भी है कि हमारे देश में लगभग 25 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए है। गौरतलब है कि आज प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत लगभग 81.35 करोड़ लाभार्थियों को निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे गरीब परिवारों की भोजन संबंधी जरूरतों और घरेलू खर्च का बोझ कम करने में मदद मिल रही है और इस योजना के तहत निःशुल्क खाद्यान्न वितरण 31 दिसंबर 2028 तक जारी रखने का निर्णय लिया गया है। वहीं पर प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत ग्रामीण और शहरी गरीब परिवारों को पक्का घर उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे है और एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार ग्रामीण आवास योजना के अंतर्गत वर्ष 2029 तक कुल 4.95 करोड़ घर उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित है। इसके अलावा, ग्रामीण परिवारों को रोजगार और आजीविका उपलब्ध कराने के लिए रोजगार गारंटी कार्यक्रम चलाए जा रहे है तथा दिसंबर 2025 में जारी सरकारी विवरण में विकसित भारत–जी राम जी अधिनियम के तहत ग्रामीण परिवारों के लिए प्रति वर्ष 125 दिन तक रोजगार की गारंटी का उल्लेख है। इतना ही नहीं, आज दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़कर बचत, बैंक ऋण, स्वरोजगार और छोटे उद्यमों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य परिवारों की नियमित आय बढ़ाना है। आयुष्मान भारत और स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत पात्र परिवारों को अस्पताल में उपचार के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा उपलब्ध कराई जाती है, जिससे बीमारी के कारण परिवारों पर पड़ने वाले भारी आर्थिक बोझ को कम करने में मदद मिलती है। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने तो गरीब परिवारों की महिलाओं को एलपीजी गैस कनेक्शन उपलब्ध कराकर स्वच्छ ईंधन तक पहुँच बनाकर रसोई की तस्वीर तक बदल दी है और इस योजना के कारण आज 10.5 करोड़ से ज्यादा घरों में एलपीजी सिलेंडर पहुंच चुका है। वहीं पर विभिन्न बुनियादी सुविधाएं जैसे कि जल जीवन मिशन, स्वच्छ भारत मिशन, ग्रामीण सड़क निर्माण, बिजली और सामाजिक सुरक्षा जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से गरीब परिवारों के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है, यह काबिले-तारीफ है। आज देश में कौशल विकास और रोजगारपरक प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया गया है तथा इस क्रम में आज दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना तथा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से युवाओं को रोजगार योग्य कौशल, प्रशिक्षण और स्वरोजगार के अवसर दिए जा रहे है।

अंत में यही कहूंगा कि गरीबी उन्मूलन के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पर्याप्त रोजगार, खाद्य एवं स्वास्थ्य सुरक्षा, महिला सशक्तीकरण और सामाजिक समानता सुनिश्चित करना आवश्यक है; सरकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों तक पहुँचाकर तथा स्वरोजगार और कौशल विकास को बढ़ावा देकर लोगों को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है, और सरकार व समाज के संयुक्त प्रयासों से ही गरीबी, भुखमरी और असमानता को कम कर एक समतामूलक समाज का निर्माण संभव है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार।

डिजिटल जीवनशैली का पर्यावरणीय बोझः अदृश्य प्रदूषण की कहानी

डॉ. विजय गर्ग

डिजिटल क्रांति ने हमारे रहने, सीखने, काम करने और संवाद करने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। स्मार्टफोन, कंप्यूटर, ऑनलाइन खरीदारी, वीडियो स्ट्रीमिंग, क्लाउड स्टोरेज और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने हमारे जीवन को तेज और सुविधाजनक बना दिया है। आज जानकारी का विशाल संसार हमारी उँगलियों के इशारे पर उपलब्ध है और डिजिटल तकनीक आधुनिक समाज का अभिन्न अंग बन चुकी है।

लेकिन हर क्लिक, डाउनलोड और ऑनलाइन गतिविधि के पीछे पर्यावरण से जुड़ी एक कीमत छिपी है। डिजिटल गतिविधियों में बिजली की खपत होती है, भौतिक बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता पड़ती है और इलेक्ट्रॉनिक कचरा उत्पन्न होता है। डिजिटल दुनिया भले ही आभासी और स्वच्छ दिखाई देती हो, लेकिन उसका पर्यावरण पर वास्तविक प्रभाव पड़ता है, जिस पर ध्यान देना आवश्यक है।

डिजिटल दुनिया का छिपा हुआ कार्बन पदचिह्न

हर ऑनलाइन गतिविधि के पीछे भौतिक बुनियादी ढाँचा काम करता है। जब हम ईमेल भेजते हैं, वीडियो देखते हैं, ऑनलाइन बैठक करते हैं या कृत्रिम बुद्धिमत्ता के किसी उपकरण का उपयोग करते हैं, तो डेटा संचार नेटवर्कों से गुजरता है और सर्वरों तथा कंप्यूटरों द्वारा संसाधित किया जाता है। इन प्रणालियों को चलाने के लिए बिजली की आवश्यकता होती है। डेटा केंद्रों में उपकरणों को गर्म होने से बचाने के लिए शीतलन प्रणालियाँ भी इस्तेमाल की जाती हैं।

डिजिटल गतिविधियों का पर्यावरणीय प्रभाव कई बातों पर निर्भर करता है, जैसे उपकरणों और डेटा केंद्रों की ऊर्जा-दक्षता, बिजली का स्रोत, संसाधित किए जाने वाले डेटा की मात्रा और उपयोग की अवधि। जब बिजली कोयले जैसे जीवाश्म ईंधनों से उत्पन्न होती है, तो डिजिटल गतिविधियाँ ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में योगदान दे सकती हैं।

व्यक्तिगत रूप से अनेक ऑनलाइन गतिविधियों का पर्यावरणीय प्रभाव छोटा हो सकता है। लेकिन दुनिया भर में डिजिटल सेवाओं के व्यापक उपयोग के कारण ऊर्जा की बचत और तकनीक का जिम्मेदारी से इस्तेमाल करना लगातार अधिक महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है।

डेटा केंद्रः हमारी स्क्रीन के पीछे की शक्ति

डेटा केंद्र आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। इनमें तस्वीरें, दस्तावेज, वीडियो, वेबसाइटें और विशाल मात्रा में जानकारी सुरक्षित रखी जाती है। ये ऑनलाइन बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, व्यापार और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी सुविधाओं को भी संचालित करते हैं।

जैसे-जैसे डिजिटल सेवाओं का विस्तार हो रहा है, कंप्यूटिंग शक्ति और डेटा भंडारण की माँग भी बढ़ रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कुछ अनुप्रयोगों को पर्याप्त कंप्यूटिंग संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसलिए डेटा केंद्रों को ऊर्जा की कुशल खपत, शीतलन की बेहतर व्यवस्था और स्वच्छ ऊर्जा के अधिक उपयोग पर ध्यान देना चाहिए।

तकनीकी कंपनियाँ ऊर्जा-कुशल उपकरणों का इस्तेमाल करके, सर्वरों की क्षमता का बेहतर उपयोग करके, अनावश्यक कंप्यूटिंग घटाकर और कम कार्बन उत्सर्जन वाली बिजली की उपलब्धता वाले स्थानों पर सुविधाएँ स्थापित करके अपना पर्यावरणीय प्रभाव कम कर सकती हैं। ऊर्जा की खपत और कार्बन उत्सर्जन के बारे में पारदर्शी जानकारी देना भी आवश्यक है।

वीडियो स्ट्रीमिंग और लगातार स्क्रॉल करने की आदत

वीडियो स्ट्रीमिंग, सोशल मीडिया और ऑनलाइन मनोरंजन आधुनिक डिजिटल जीवन के प्रमुख हिस्से बन चुके हैं। उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो, अपने आप चलने वाले वीडियो, बार-बार डाउनलोड और बड़ी फाइलों का लगातार आदान-प्रदान डेटा प्रसंस्करण तथा नेटवर्क क्षमता की माँग बढ़ाते हैं।

किसी वीडियो का पर्यावरणीय प्रभाव उसकी गुणवत्ता, देखने की अवधि, उपकरण के प्रकार तथा डेटा केंद्रों और नेटवर्कों द्वारा उपयोग की जाने वाली बिजली पर निर्भर करता है। यह मान लेना उचित नहीं है कि हर ऑनलाइन गतिविधि का कार्बन पदचिह्न समान होता है।

फिर भी, बड़े पैमाने पर अनावश्यक डेटा खपत डिजिटल बुनियादी ढाँचे की माँग बढ़ा सकती है। जब उच्च गुणवत्ता की आवश्यकता न हो, तो वीडियो का रिजॉल्यूशन कम रखना, ऑटो-प्ले बंद करना, एक ही फाइल को बार-बार डाउनलोड करने से बचना और क्लाउड में अनावश्यक प्रतियाँ कम करना अधिक जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार को बढ़ावा दे सकता है।

उद्देश्य तकनीक के उपयोग को रोकना नहीं, बल्कि ऐसी संतुलित डिजिटल जीवनशैली अपनाना है जिसमें सुविधा के साथ पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी भी शामिल हो।

इलेक्ट्रॉनिक कचराः डिजिटल प्रगति की भौतिक कीमत

डिजिटल क्रांति के सबसे स्पष्ट पर्यावरणीय परिणामों में से एक इलेक्ट्रॉनिक कचरा है, जिसे ई-कचरा भी कहा जाता है। स्मार्टफोन, लैपटॉप, टैबलेट, चार्जर, बैटरियाँ और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण समय के साथ पुराने या अनुपयोगी हो जाते हैं।

इन उपकरणों के निर्माण के लिए कच्चे माल, ऊर्जा, पानी और जटिल औद्योगिक प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। धातुओं का खनन और प्रसंस्करण पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँचा सकता है, जबकि उपकरणों के निर्माण और परिवहन से भी प्रदूषण उत्पन्न होता है।

जब पुराने उपकरणों का अनुचित तरीके से निपटान किया जाता है, तो हानिकारक पदार्थ मिट्टी, हवा और पानी को दूषित कर सकते हैं। अनौपचारिक तरीकों से पुनर्चक्रण करने वाले श्रमिक भी जहरीले पदार्थों और असुरक्षित कार्य परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं।

ठीक से काम कर रहे उपकरणों को बार-बार बदलने की आदत इस समस्या को और बढ़ाती है। केवल फैशन, विज्ञापन या मामूली तकनीकी सुधारों के कारण नए उपकरण खरीदने से संसाधनों की खपत बढ़ सकती है, जबकि उपयोगकर्ता को वास्तविक लाभ बहुत कम मिलता है।

उपकरणों की मरम्मत करवाना, उनकी उपयोग अवधि बढ़ाना, टिकाऊ उत्पाद खरीदना, काम करने योग्य उपकरण दान करना और अधिकृत पुनर्चक्रण केंद्रों का उपयोग करना पर्यावरणीय बोझ को कम कर सकता है। निर्माताओं की भी जिम्मेदारी है कि वे ऐसे उत्पाद तैयार करें जिनकी मरम्मत आसान हो, जो ऊर्जा की कम खपत करें और जिन्हें पुनर्चक्रित करना सरल हो।

क्लाउड कंप्यूटिंग भी पर्यावरण से मुक्त नहीं

'क्लाउड' शब्द से ऐसा लग सकता है कि डिजिटल जानकारी किसी ऐसी जगह मौजूद है जिसका भौतिक दुनिया से कोई संबंध नहीं है। वास्तविकता यह है कि क्लाउड कंप्यूटिंग इमारतों, सर्वरों, शीतलन प्रणालियों, संचार नेटवर्कों और बिजली पर निर्भर करती है।

एक ही फाइल की कई प्रतियाँ रखना, अनावश्यक बैकअप बनाना और अनुपयोगी डिजिटल संसाधनों को सक्रिय रखना अतिरिक्त भंडारण तथा कंप्यूटिंग क्षमता की खपत कर सकता है। हालाँकि, हर पुराना ईमेल या तस्वीर मिटा देना जलवायु संकट का कोई बड़ा समाधान नहीं है। अधिक महत्त्वपूर्ण लाभ ऊर्जा-कुशल बुनियादी ढाँचे, स्वच्छ बिजली, विवेकपूर्ण डेटा प्रबंधन और जिम्मेदार खरीदारी से प्राप्त हो सकते हैं।



क्लाउड सेवाएँ पुरानी और कम कुशल प्रणालियों की जगह लेकर या अनावश्यक यात्राओं तथा संसाधनों की खपत घटाकर पर्यावरण के लिए लाभकारी भी हो सकती हैं। उनका समग्र पर्यावरणीय प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें किस प्रकार विकसित और उपयोग किया जाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताः अवसर और पर्यावरणीय जिम्मेदारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, वैज्ञानिक अनुसंधान और पर्यावरण निगरानी में नई संभावनाएँ पैदा कर रही है। यह मौसम के पैटर्न का विश्लेषण करने, ऊर्जा प्रबंधन सुधारने, फसलों की बीमारियों की पहचान करने और स्वच्छ तकनीकों के विकास में मदद कर सकती है।

इसके साथ ही, कुछ AI प्रणालियों को प्रशिक्षित करने और संचालित करने के लिए पर्याप्त कंप्यूटिंग शक्ति की आवश्यकता होती है। उनका पर्यावरणीय प्रभाव मॉडल के आकार, हार्डवेयर की दक्षता, अनुरोधों की संख्या और जटिलता तथा बिजली के स्रोत पर निर्भर करता है।

समाधान कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अस्वीकार करना नहीं, बल्कि उसका जिम्मेदारी से विकास और उपयोग करना है। अधिक कुशल एल्गोरिदम, विशेष हार्डवेयर, नवीकरणीय ऊर्जा, पारदर्शी रिपोर्टिंग और अनावश्यक कंप्यूटिंग से बचाव इसके पर्यावरणीय प्रभाव को कम कर सकते हैं।

AI का मूल्यांकन केवल उसकी गति और क्षमताओं के आधार पर नहीं, बल्कि उसके संसाधनों की खपत और समाज को मिलने वाले लाभों के आधार पर भी किया जाना चाहिए।

भारत का डिजिटल विकास और पर्यावरणीय चुनौतियाँ

भारत में ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल भुगतान, ई-कॉमर्स, दूरसंचार और AI-आधारित सेवाओं के माध्यम से डिजिटल विकास तेजी से हो रहा है। ये सुविधाएँ जानकारी तक पहुँच बढ़ा सकती हैं, नए अवसर पैदा कर सकती हैं और आर्थिक विकास को समर्थन दे सकती हैं।

लेकिन डिजिटल बुनियादी ढाँचे के विस्तार से विश्वसनीय बिजली, कुशल शीतलन प्रणालियों, संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग और ई-कचरे के प्रभावी प्रबंधन की आवश्यकता भी बढ़ती है। भारत में बिजली उत्पादन के लिए कोयला अभी भी एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसलिए डिजिटल बुनियादी ढाँचे की ऊर्जा-दक्षता बढ़ाना और स्वच्छ ऊर्जा की हिस्सेदारी में वृद्धि करना विशेष रूप से आवश्यक है।

भारत ई-कचरे के संग्रह और पुनर्चक्रण की व्यवस्था मजबूत करके, उपकरणों की मरम्मत तथा पुनः उपयोग को प्रोत्साहित करके, ऊर्जा-कुशल डेटा केंद्रों को बढ़ावा देकर और जन-जागरूकता बढ़ाकर टिकाऊ डिजिटल भविष्य की दिशा में आगे बढ़ सकता है। इसके लिए उपभोक्ताओं, तकनीकी कंपनियों, शैक्षणिक संस्थानों और नीति-निर्माताओं की साझा भूमिका है।

हरित डिजिटल जीवनशैली की ओर व्यावहारिक कदम

पर्यावरण की रक्षा के लिए स्मार्टफोन, कंप्यूटर या ऑनलाइन सेवाओं को छोड़ना आवश्यक नहीं है। इसके लिए सोच-समझकर विकल्प चुनने और तकनीकी क्षेत्र में सुधारों को प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

व्यक्तिगत स्तर पर:

- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की उपयोग अवधि बढ़ाएँ और जहाँ संभव हो, उनकी मरम्मत करवाएँ।

- अनावश्यक नए उपकरण खरीदने से बचें और टिकाऊ तथा ऊर्जा-कुशल उत्पाद चुनें।

- उपयोग में न आने वाले उपकरण बंद करें और ऊर्जा बचाने वाली सेटिंग्स का इस्तेमाल करें।

- अनावश्यक वीडियो स्ट्रीमिंग, ऑटो-प्ले और एक ही फाइल को बार-बार डाउनलोड करने से बचें।

- जहाँ उचित हो, अनावश्यक डिजिटल फाइलें हटाएँ, लेकिन यह समझें कि इससे समग्र पर्यावरणीय समस्या का केवल एक छोटा हिस्सा ही हल होता है।

- उपयोग योग्य उपकरण दान करें और पुराने इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अधिकृत संग्रह या पुनर्चक्रण केंद्रों पर जमा करवाएँ।

परिवारों और शैक्षणिक संस्थानों के स्तर पर:

- विद्यार्थियों को ई-कचरे, ऊर्जा संरक्षण और तकनीक के जिम्मेदार उपयोग के बारे में शिक्षित करें।

- पुराने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को सुरक्षित रूप से एकत्र करने के लिए अभियान चलाएँ।

- जहाँ उपयुक्त हो, उपकरण साझा करने, उनका नवीनीकरण करने और मरम्मत को प्रोत्साहित करें।

- ऐसी डिजिटल आदतों को बढ़ावा दें जो उत्पादकता, व्यक्तिगत कल्याण और पर्यावरणीय जागरूकता के बीच संतुलन बनाएँ।

सरकारों और तकनीकी कंपनियों के स्तर पर:

- डिजिटल बुनियादी ढाँचे के लिए विश्वसनीय और कम कार्बन उत्सर्जन वाली बिजली की उपलब्धता बढ़ाएँ।

- डेटा केंद्रों में ऊर्जा और पानी के कुशल उपयोग को बेहतर बनाएँ।

- ऐसे उपकरण तैयार करें जो टिकाऊ, मरम्मत योग्य और पुनर्चक्रण योग्य हों।

- ई-कचरे के सुरक्षित संग्रह और पुनर्चक्रण की व्यवस्था मजबूत करें।

- पर्यावरणीय प्रभाव से संबंधित जानकारी सार्वजनिक करें और मापे जा सकने वाले स्थिरता लक्ष्य निर्धारित करें।

- अधिक कुशल डिजिटल सेवाओं और AI प्रणालियों का विकास करें।

टिकाऊ डिजिटल भविष्य की ओर

डिजिटल तकनीक न तो अपने आप में हानिकारक है और न ही स्वतः पर्यावरण-अनुकूल। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि यह कितने संसाधनों का उपयोग करती है, इसे कौन-सा बुनियादी ढाँचा समर्थन देता है और इसका इस्तेमाल किन उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

ऑनलाइन शिक्षा कुछ यात्राओं को कम कर सकती है, डिजिटल दस्तावेज कागज की बचत कर सकते हैं और बुद्धिमान प्रणालियाँ इमारतों, उद्योगों तथा परिवहन की दक्षता बढ़ा सकती हैं। दूसरी ओर, बिजली, कंप्यूटिंग बुनियादी ढाँचे और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की बढ़ती माँग नई पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी पैदा कर सकती है।

वास्तविक चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि डिजिटल प्रगति के लाभ बिना आवश्यकता पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए प्राप्त किए जाएँ। तकनीकी नवाचार के साथ ऊर्जा संरक्षण, संसाधनों का पुनः उपयोग, जिम्मेदार विनिर्माण और पर्यावरण के प्रति जवाबदेही को भी महत्त्व देना होगा।

डिजिटल दुनिया भले ही दिखाई न देती हो, लेकिन उसका पर्यावरणीय प्रभाव वास्तविक है। प्रत्येक उपकरण के पीछे कच्चे माल और ऊर्जा के उपयोग का इतिहास है, हर डिजिटल सेवा भौतिक बुनियादी ढाँचे पर निर्भर करती है और हर तकनीकी विकल्प के अपने परिणाम होते हैं। टिकाऊ भविष्य के लिए हमें स्क्रीन से परे देखकर उन संसाधनों को समझना होगा, जो हमारे जुड़े हुए डिजिटल जीवन को संभव बनाते हैं। हमारा लक्ष्य प्रगति को कम करना नहीं, बल्कि उसे अधिक समझदार बनाना होना चाहिए—ऐसी प्रगति, जो मानवता की सेवा करे और पृथ्वी की रक्षा भी करे।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात वैज्ञानिक गली कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

एनआईटी राउरकेला को अदालत से झटका, 1,872 पेड़ों की कटाई का मामला खारिज करने की अर्जी



सिविल जज सीनियर डिवीजन कोर्ट ने एनआईटी की दलीलें स्वीकार नहीं कीं; 6 नवंबर को अगली सुनवाई, 91 करोड़ रुपये की निर्माण परियोजना पर भी टिकी निगाहें

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला



राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), राउरकेला में परिसर विस्तार के लिए 1,872 पेड़ों की कटाई को लेकर चल रही कानूनी लड़ाई ने नया मोड़ ले लिया है। राउरकेला सिविल जज (सीनियर डिवीजन) अदालत ने मूल दीवानी मुकदमे को खारिज करने के लिए एनआईटी की ओर से दायर याचिका को नामंजूर कर दिया है। अदालत के इस फैसले के बाद पेड़ों की कटाई की अनुमति को चुनौती देने वाले मामले की सुनवाई आगे बढ़ने का रास्ता साफ हो गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, अदालत ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद एनआईटी की ओर से प्रस्तुत आधारों को कानूनी रूप से स्वीकार्य नहीं माना। न्यायालय ने संस्थान को अपना लिखित पक्ष दाखिल करने का निर्देश देते हुए मामले की अगली सुनवाई *6 नवंबर* के लिए निर्धारित की है।

इस मामले में दिल्ली के अधिवक्ता वशिष्ठ राय और दो अन्य लोगों ने जून में दीवानी मुकदमा दायर किया था। याचिकाकर्ताओं ने राउरकेला वन प्रभाग के अधिकारी द्वारा एनआईटी परिसर में निर्माण कार्य के लिए 1,872 पेड़ों की कटाई की अनुमति को अवैध घोषित करने की मांग की है। साथ ही, पेड़ों की कटाई पर रोक लगाने के लिए अंतरिम राहत संबंधी आवेदन भी दाखिल किए गए हैं।

एनआईटी ने मुकदमे को खारिज कराने के उद्देश्य से 6 जुलाई को अदालत में आवेदन दिया था, जिसे अब अस्वीकार कर दिया गया है। हालांकि, इस आदेश को पेड़ कटाई की अनुमति पर अंतिम फैसला नहीं माना जा सकता। मूल मामले में अभी न्यायिक निर्णय होना बाकी है।

विवाद के केंद्र में संस्थान के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के लिए प्रस्तावित नया भवन है। परियोजना का अनुमानित बजट करीब *91 करोड़ रुपये* है। भवन का कुल प्लिंथ क्षेत्र 28,000 वर्ग मीटर प्रस्तावित है, जबकि पहले चरण में 16,000 वर्ग मीटर क्षेत्र में निर्माण की योजना है।

यह मामला विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन से जुड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाता है। अब निगाहें 6 नवंबर की सुनवाई पर हैं, जहां संस्थान के लिखित जवाब और याचिकाकर्ताओं की दलीलें आगे की कानूनी दिशा तय करने में अहम भूमिका निभा सकती हैं।

विलुप्त होती 'नरवत' परंपरा और दशहरा मांडणा पर हुई

विलुप्त होती 'नरवत' परंपरा और दशहरा मांडणा पर हुई चर्चा

हिमाचल व छत्तीसगढ़ की बालिकाओं ने भी जाना निमाड़ का सांस्कृतिक वैभव



महेश्वर।* निमाड़ की लोक-संस्कृति, मातृभाषा और विलुप्त होती पारंपरिक लोक परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से 'हमारी संस्कृति, हमारी धरोहर' श्रृंखला के अंतर्गत 'नरवत' एवं दशहरा मांडणा पर ऑनलाइन वार्ता का आयोजन किया गया।

देवी अहिल्या स्मृति सेवा संस्थान, महेश्वर के सानिध्य में अनुरनन प्रतिध्वनि साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था, महेश्वर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रों से समाजजन जुड़े। विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश और छत्तीसगढ़ से आई बालिकाओं ने भी सहभागिता कर निमाड़ की इस विशिष्ट परंपरा को जाना।

कार्यक्रम में भोपाल की प्रसिद्ध लोक कलाकार एवं लोक गायिका *पूर्णिमा चतुर्वेदी* ने नरवत परंपरा से जुड़ी लोक मान्यताओं, पारंपरिक गीतों और रीति-रिवाजों की जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि नरवत केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि लोकजीवन, पारिवारिक संस्कारों और सामूहिक आस्था से जुड़ी सांस्कृतिक धरोहर है। मिट्टी की आकृतियों को फूलों और पीले कनेर से सजाने तथा पूजा-अर्चना करने की परंपरा नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती है।

इस वार्ता में दशहरा मांडणा बनाने की विधि, उसके पारंपरिक स्वरूप और सांस्कृतिक महत्व पर भी विस्तार से चर्चा हुई। लोकपरंपराओं के पीछे छिपे सांस्कृतिक भाव, लोक विश्वास और सामाजिक जुड़ाव को रेखांकित करते हुए इनके संरक्षण की आवश्यकता बताई गई।

युवा वाहिनी एवं युवा महासभा के सहयोग से आयोजित इस ऑनलाइन कार्यक्रम में लगभग 60 से 70 समाजजन गूगल मीट के माध्यम से जुड़े। कार्यक्रम का उद्देश्य नई पीढ़ी को निमाड़ की लोक-संस्कृति से परिचित कराना तथा विलुप्त होती परंपराओं के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा।

कार्यक्रम की सराहना करते हुए एडवोकेट जितेंद्र नेगी, कवि शिशिर उपाध्याय, युवा कवि मनीष कुमार पाटीदार सहित अनेक साहित्यकारों ने इसे निमाड़ की लोक-संस्कृति एवं परंपराओं के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन अनुरनन प्रतिध्वनि संस्था की संस्थापक *स्वाति सिंह* ने किया। कार्यक्रम के माध्यम से संदेश दिया गया कि लोकपरंपराएँ हमारी सांस्कृतिक पहचान और अस्मिता की आधारशिला हैं। इन्हें केवल स्मृतियों तक सीमित न रखकर व्यवहार में जीवित रखना और भावी पीढ़ी तक पहुँचाना हम सभी का सामूहिक दायित्व है।

राउरकेला में नकली शराब के कारोबार पर आबकारी विभाग का बड़ा प्रहार, 20 लाख की शराब जब्त

बिसरा के लोआराम गांव में आबकारी खुफिया ब्यूरो की छापेमारी, 462 लीटर से अधिक शराब बरामद; एक आरोपी गिरफ्तार

गोवा, अरुणाचल प्रदेश, उत्तराखंड और झारखंड में बिक्री के लिए चिह्नित शराब की ओडिशा में बरामदगी से आपूर्ति नेटवर्क पर उठे सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

सुंदरगढ़ जिले के राउरकेला क्षेत्र में अवैध शराब के कारोबार के खिलाफ आबकारी विभाग ने बड़ी कार्रवाई की है। बिसरा थाना क्षेत्र के लोआराम गांव में आबकारी खुफिया एवं प्रवर्तन ब्यूरो (ईआई एंड ईबी), उत्तरी संभाग, संबलपुर की सैटेलाइट यूनिट ने छापेमारी कर लगभग 20 लाख रुपये मूल्य की संदिग्ध नकली एवं आबकारी शुल्क अदा न की गई शराब जब्त की है। कार्रवाई के दौरान एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, छापेमारी में कुल 462.285 लीटर शराब बरामद हुई। जब्त बोतलों पर गोवा, अरुणाचल प्रदेश, उत्तराखंड और झारखंड में ही बिक्री के लिए निर्धारित होने का उल्लेख मिला है। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि अन्य राज्यों के लिए चिह्नित शराब की इतनी बड़ी खेप ओडिशा के सीमावर्ती इलाके तक कैसे पहुंची।

अंतरराज्यीय आपूर्ति नेटवर्क की जांच महत्वपूर्ण बरामदगी ने शराब के परिवहन, भंडारण और संभावित अवैध वितरण नेटवर्क की जांच को महत्वपूर्ण बना दिया है। हालांकि, शराब की वास्तविक गुणवत्ता, निर्माण स्रोत और नकली होने की पुष्टि के लिए संबंधित जांच आवश्यक होगी। फिलहाल गिरफ्तार आरोपी की पहचान तथा शराब के संभावित आपूर्तिकर्ताओं का विस्तृत विवरण सामने नहीं आया है।

इस बीच, ओडिशा में अवैध शराब के खिलाफ व्यापक अभियान जारी है। एक अलग रिपोर्ट के अनुसार, राज्य आबकारी विभाग ने 26 सितंबर से 12 अक्टूबर के बीच अभियान चलाकर शराब और मादक पदार्थों सहित लगभग 5.1 करोड़ रुपये मूल्य की सामग्री जब्त की तथा 4,041 आबकारी मामले दर्ज किए।

राजस्व नुकसान के साथ जनस्वास्थ्य पर भी खतरा ओडिशा की आबकारी नीति 2026-29 में अवैध और मिलावटी शराब पर नियंत्रण, राजस्व सुरक्षा तथा उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य संरक्षण को प्रमुख प्राथमिकता दी गई है।

बिसरा की इस कार्रवाई के बाद अब जांच का महत्वपूर्ण पहलू यह होगा कि शराब की खेप कहां से आई, किसके लिए मंगाई गई थी और इसके पीछे कोई संगठित नेटवर्क सक्रिय है या नहीं। मामले की जांच जारी है।



पुराना ब्राह्मणी पुल रोशनी से जगमगाया, स्ट्रीट लाइट सुधार की पहल से लोगों में संतोष

राउरकेला महानगर निगम ने कराई मरम्मत; पिछले सप्ताह उठाए गए मुद्दे के बाद कार्रवाई को माना जा रहा सकारात्मक संकेत, बसंती कॉलोनी सहित कई इलाकों में अब भी समस्या

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला



शहर में सड़क सुरक्षा और रात के समय आवागमन को सुगम बनाने की दिशा में राउरकेला महानगर निगम ने पुराने ब्राह्मणी पुल की स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत कर उन्हें फिर से रोशन कर दिया है। निगम की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार, आवश्यक मरम्मत के बाद पुल पर रोशनी की व्यवस्था बहाल हो गई है। इससे रात में आवागमन करने वाले लोगों को बेहतर दृश्यता मिलने और सड़क सुरक्षा में सुधार की उम्मीद है।

पुराने ब्राह्मणी पुल पर स्ट्रीट लाइटों की समस्या को लेकर बीते सप्ताह भी खबर प्रकाशित की गई थी। ऐसे में मरम्मत के बाद रोशनी बहाल होने को उस मुद्दे के सकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि, इस कार्रवाई और पूर्व में प्रकाशित खबर के बीच प्रत्यक्ष संबंध की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, फिर भी नागरिक समस्याओं को लगातार सामने लाने और संबंधित विभागों का ध्यान आकर्षित करने की अहमियत एक बार फिर रेखांकित हुई है।

कुछ इलाकों में अब भी अंधेरे की समस्या पुराने ब्राह्मणी पुल पर रोशनी बहाल होने से लोगों में संतोष देखा जा रहा है, लेकिन शहर की तस्वीर अभी पूरी तरह नहीं बदली है। विभिन्न सड़कों पर स्ट्रीट लाइटों के खराब रहने की शिकायतें अब भी सामने आ रही हैं। विशेष रूप से बसंती कॉलोनी के कुछ ब्लॉकों में स्ट्रीट लाइट की समस्या का समाधान किया जाना आवश्यक है। रात के समय अंधेरी सड़कों और गलियों से गुजरने वाले स्थानीय निवासियों को असुविधा के साथ सुरक्षा संबंधी चिंता भी बनी रहती है।

नियमित निगरानी से ही मिलेगी स्थायी राहत पुराने ब्राह्मणी पुल पर मरम्मत की कार्रवाई निगम की ओर से शहरी सुविधाओं को दुरुस्त करने का एक आश्वस्तकारी संकेत है। अब अपेक्षा है कि इसी पहल के तहत बसंती कॉलोनी सहित अन्य प्रभावित इलाकों की भी समीक्षा कर खराब स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत समयबद्ध ढंग से की जाएगी।

शहरवासियों की मांग है कि महानगर निगम केवल शिकायत मिलने पर ही नहीं, बल्कि नियमित निरीक्षण के माध्यम से भी प्रकाश व्यवस्था की निगरानी करे, ताकि राउरकेला की सड़कों पर रात के समय सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित किया जा सके।

राष्ट्रीय कार्यशाला के लिए मुजफ्फरपुर के कुमार अभिषेक और अभिषेक कुमार चयनित, भुवनेश्वर में करेंगे बिहार का प्रतिनिधित्व

26-27 अक्टूबर को ओडिशा के वर्ल्ड स्किल सेंटर में होगा आयोजन; कौशल आधारित शिक्षा, बैगलेस डे और करियर मार्गदर्शन पर मिलेगा प्रशिक्षण



कुमार अभिषेक अभिषेक कुमार

मुजफ्फरपुर। जिले के दो शिक्षकों का चयन राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित दो दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यशाला के लिए किया गया है। उत्क्रमित मध्य विद्यालय सलेमपुर ढाब (कांटी) के गणित एवं विज्ञान विषय के विद्यालय अध्यापक सह डिस्ट्रिक्ट टेक्निकल टीम लीड (पीबीएल) सह डिस्ट्रिक्ट रिसोर्स पर्सन (टीएआरएल) कुमार अभिषेक तथा उत्क्रमित मध्य विद्यालय गोपालपुर नेउरा (सरैया) के गणित एवं विज्ञान विषय के विद्यालय अध्यापक सह डिस्ट्रिक्ट टेक्निकल टीम सदस्य (पीबीएल) सह डिस्ट्रिक्ट रिसोर्स पर्सन (टीएआरएल) अभिषेक कुमार इस कार्यशाला में बिहार का प्रतिनिधित्व करेंगे।

कार्यशाला का आयोजन 26 एवं 27 अक्टूबर 2026 को वर्ल्ड स्किल सेंटर, भुवनेश्वर (ओडिशा) में किया जाएगा। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत एनसीईआरटी की घटक इकाई पीएसएस सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ वोकेशनल एजुकेशन (PSSCIVE), भोपाल द्वारा इसका आयोजन किया जा रहा है।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य स्कूली शिक्षकों की क्षमता का संवर्धन करना तथा विद्यालयों में कौशल आधारित बैगलेस डे, 'कौशल बोध' और 'माई करियर एडवाइजर ऐप' के प्रभावी क्रियान्वयन को बढ़ावा देना है। इसके माध्यम से शिक्षकों को व्यावहारिक कौशल आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम और विद्यार्थियों को करियर मार्गदर्शन प्रदान करने के तरीकों का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद दोनों शिक्षक अपने अनुभवों एवं अर्जित ज्ञान को राज्य के अन्य शिक्षकों के साथ साझा करेंगे। इससे विद्यालयों में कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने तथा विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान, रोजगारोन्मुख कौशल और भविष्य में करियर चयन के प्रति जागरूक बनाने में मदद मिलेगी।

दोनों शिक्षकों के चयन पर जिला शिक्षा पदाधिकारी कुमार अरविंद सिन्हा, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी आयुष कुमार तथा जिला शिक्षक शिक्षा समन्वयक मनोज कुमार ने हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने दोनों शिक्षकों को राष्ट्रीय कार्यशाला में सफल सहभागिता के लिए शुभकामनाएं दी।

राजकीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू, मुरौल के प्रधान शिक्षक सह डिस्ट्रिक्ट टेक्निकल टीम लीड (पीबीएल) सह डिस्ट्रिक्ट रिसोर्स पर्सन (टीएआरएल) केशव कुमार ने दोनों शिक्षकों के चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह उपलब्धि मुजफ्फरपुर जिले के लिए गौरव का विषय है। इससे जिले में तकनीकी नवाचार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण को बढ़ावा देने के प्रयासों को नई दिशा मिलेगी।



दुर्गा पूजा महादेव मंडा मुरहू प्राचीनतम और गौरवशाली

डॉ दीपक कुमार घोष

खूंटी। दुर्गोत्सव की पावन बयार जिले भर में बह रही है।माँ दुर्गा की पूजा-अर्चना को लेकर श्रद्धालुओं में उत्साह और भक्तिमय माहौल देखने को मिल रहा है। पूजा पंडाल में माँ दुर्गा के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही है। भक्त माता रानी के दरबार में माथा टेककर सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की कामना कर रहे हैं। मुरहू में महादेव मंडा, मेन रोड, कुंजला, कोड़ाकेल, गनालोया, पांडू आदि कई जगहों पर पूजा होती है, परंतु महादेव मंडा मुरहू का दुर्गा पूजा ऐतिहासिक- सांस्कृतिक और गौरवशाली इतिहास समेटे हुए है। मंदिर पर अंकित और पूर्व पुजारी स्वर्गीय पंडित सच्चिदानंद मिश्र के सानिध्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार समाजसेवी डॉ धर्मेंद्र नाथ तिवारी ने बताया कि अंग्रेजी काल से ही विषम परिस्थितियों के वावजूद सन-1858 से यहां पूजा-आराधना पारंपरिक विधि-विधान के साथ कराईं जा रही है। वर्तमान में पंडित दिनेश झा मुख्य पुजारी पूजा करा रहे हैं।समिति के अध्यक्ष कुंदन गुप्ता की सक्रियता सामाजिक कार्यों में शुरू से ही है, लेकिन इस बार सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाए जाने पर भक्ति चरम पर पहुंच गई है। महामंत्री बलवीर प्रसाद और कोषाध्यक्ष मिथिलेश ठाकुर माता की पूजा कार्यक्रम को बखूबी संभाल रहे हैं। पूर्व अध्यक्ष विष्णु गुप्ता ने बताया कि हर वर्ष की भांति सप्तमी अष्टमी और नवमी को शाम से मंदिर परिसर में फिल्में दिखाई जाएंगी। सामाजिक कार्यकर्ता विक्की गुप्ता, रणजीत गुप्ता, कृष्णा प्रसाद, रंजीत गुप्ता डल्लू, सुरेश प्रसाद, रामहरि साव, दीपक कुमार गुप्ता, सीताराम प्रसाद, दीपक सेन, सुरेश प्रसाद अकेला, सुबोध मुखिया, रोशन कुमार, मुरली गुप्ता, संतोष प्रसाद, बसंत ठाकुर अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।मेन रोड दुर्गा पूजा के अध्यक्ष रामा साव, दिलीप कुमार सहित ग्रामीण पूरे श्रद्धाभाव से पूजा में शामिल होकर माँ दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं।

जब तक सरकार स्वयं अपने कार्बन पदचिह्न, अपने डेटा सेंटर, अपने ई-कचरे का हिसाब नहीं देगी, तब तक पर्यावरण का मुद्दा जनता के लिए सजा और सत्ता के लिए कमाई का साधन बना रहेगा।

जब तक सरकार स्वयं अपने कार्बन पदचिह्न, अपने डेटा सेंटर, अपने ई-कचरे का हिसाब नहीं देगी, तब तक पर्यावरण का मुद्दा जनता के लिए सजा और सत्ता के लिए कमाई का साधन बना रहेगा।

पर्यावरण: आज का सबसे बड़ा मुद्दा — लेकिन दोषी कौन? कारक कौन? सजा किसे?

प्रस्तुतकर्ता संजय कुमार बाठला

पर्यावरण शब्द आज सत्ता का सबसे सुविधाजनक हथियार बन गया है। जनता को डराने, लूटने, जुर्माना लगाने और सजा देने के लिए इस शब्द का प्रयोग बखूबी हो रहा है। लेकिन प्रश्न यह है कि — पर्यावरण के लिए उत्तरदायी और उसे बढ़ाने वाले कारक स्वयं सरकार और सरकारी विभाग तो नहीं हैं?

डिजिटल दुनिया आभासी दिखती है, लेकिन उसका बोझ वास्तविक है। हर क्लिक के पीछे डेटा सेंटर, बिजली, ई-कचरा और कार्बन है।

1. मुख्य तथ्य — डिजिटल प्रदूषण अदृश्य है, पर वास्तविक है

- डेटा केंद्र: हर ईमेल, वीडियो, AI चैट के पीछे सर्वर चलते हैं। भारत में बिजली का बड़ा हिस्सा अभी भी कोयले से बनता है। यानी डिजिटल सुविधा का मतलब कोयले का धुआं है।

- वीडियो और स्क्रॉल: ऑटो-प्ले, 4K स्ट्रीमिंग, बार-बार डाउनलोड — यह सब बेवजह डेटा और ऊर्जा की खपत बढ़ाता है।

- ई-कचरा: स्मार्टफोन, लैपटॉप, चार्जर — हर साल करोड़ों टन ई-कचरा। अनौपचारिक रीसाइक्लिंग में श्रमिक जहरीले पदार्थ झेलते हैं, मिट्टी और पानी दूषित होता है।

- क्लाउड का भ्रम: क्लाउड कोई बादल नहीं है — इमारत, सर्वर, कूलिंग सिस्टम और बिजली है।

- AI की कीमत: AI प्रशिक्षण में भारी कंप्यूटिंग लगती है। लाभ के साथ-साथ उसकी ऊर्जा लागत भी गिननी होगी।

2. विडंबना — जो कारक हैं, वही न्यायाधीश बने हुए हैं

- सरकार ही सबसे बड़ी प्रदूषक है: सरकारी विभागों के बड़े डेटा सेंटर, सरकारी भवनों की बिजली खपत, सरकारी परियोजनाओं का ई-कचरा, सरकारी वाहनों का धुआं — इन पर कोई GRAP, कोई चालान, कोई जुर्माना नहीं।

- नियम जनता के लिए, छूट व्यवस्था के लिए: आम नागरिक पर पराली, वाहन, पटाखे पर सख्ती — लेकिन सरकारी फैक्ट्री, सरकारी निर्माण, सरकारी कचरा प्रबंधन की विफलता पर मौन।

- पर्यावरण के नाम पर वसूली: पर्यावरण क्लीयरेंस, NOC, प्रदूषण प्रमाणपत्र, जुर्माना — यह व्यवस्था जनता के लिए छल का साधन बन गई है, जबकि मूल कारक — कोयला आधारित बिजली, अनियोजित शहरीकरण, ई-कचरे का अवैध व्यापार — सरकार की नीतियों से ही बढ़ रहा है।



>जनता पूछती है — जब सरकार स्वयं पर्यावरण को बढ़ावा दे रही है, तो सजा सिर्फ जनता को क्यों?

3. जनता कैसे बचे — व्यावहारिक सुरक्षा कवच

A. व्यक्तिगत स्तर पर:

- उपकरण की उम्र बढ़ाएं, मरम्मत कराएं, अनावश्यक अपग्रेड न करें

- वीडियो रिजॉल्यूशन कम रखें, ऑटो-प्ले बंद करें

- पुराने उपकरण अधिकृत रीसाइक्लर को ही दें

- ऊर्जा-बचत मोड और स्वच्छ बिजली विकल्प चुनें

B. कानूनी स्तर पर:

- RTI से पूछें — आपके जिले में सरकारी डेटा सेंटर, नगर निगम, सरकारी विभाग का कार्बन ऑडिट कहां है?

- पर्यावरण नियमों का उल्लंघन करने वाले विभाग के खिलाफ NGT / प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में शिकायत दर्ज करें — केवल जनता के खिलाफ नहीं, व्यवस्था के खिलाफ भी।

- प्रदूषण के नाम पर अवैध वसूली हो तो उसकी रसीद, आदेश और कानूनी आधार मांगें।

C. सामूहिक स्तर पर:

- स्कूल-कॉलेज में ई-कचरा अभियान चलाएं

- स्थानीय स्तर पर राइट टू रिपेयर आंदोलन — मरम्मत का अधिकार

4. कारक को सजा कैसे हो — जवाबदेही का मॉडल

1. Polluter Pays Principle — सबके लिए: यह सिद्धांत सिर्फ उद्योगपतियों और किसानों पर नहीं, सरकारी विभागों पर भी लागू हो। सरकारी विभाग प्रदूषण फैलाए तो उसका बजट कटे, अधिकारी जिम्मेदार ठहरें।

2. पारदर्शी ऑडिट: हर सरकारी विभाग का वार्षिक कार्बन और ई-कचरा ऑडिट सार्वजनिक हो — जैसे निजी कंपनियों से मांगा जाता है।

3. ग्रीन प्रोक्योरमेंट: सरकार केवल ऊर्जा-कुशल, मरम्मत-योग्य, रीसाइकिल-योग्य उत्पाद खरीदे।

4. NGT और कोर्ट की भूमिका: कोर्ट ने दिल्ली प्रदूषण पर कहा — हमारे पास जादू की छड़ी नहीं है। सही है, लेकिन कोर्ट को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सरकार अपनी जिम्मेदारी से भाग न सके।

5. नागरिक को संरक्षण: पर्यावरण कानून का प्रयोग जनता को लूटने के लिए नहीं, जनता की रक्षा के लिए हो।

5. निष्कर्ष — प्रगति को समझदार बनाना होगा

डिजिटल तकनीक न तो अपने आप हानिकारक है, न अपने आप पर्यावरण-अनुकूल। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि इसे कौन चलाता है और किस उद्देश्य से।

आज आवश्यकता है —

- प्रगति कम नहीं, प्रगति समझदार हो

- सजा जनता को नहीं, कारक को हो

- पर्यावरण शब्द छल का साधन नहीं, रक्षा का संकल्प बने

जब तक सरकार स्वयं अपने कार्बन पदचिह्न, अपने डेटा सेंटर, अपने ई-कचरे का हिसाब नहीं देगी, तब तक पर्यावरण का मुद्दा जनता के लिए सजा और सत्ता के लिए कमाई का साधन बना रहेगा।

शारदीय दुर्गा की मृण्मय मूर्ति, पूजा का राजा प्रताप आदित्य व रानी अरूणिमा ने किया उद्घाटन



जिनके प्रताप से मुगल ,मराठा , अंग्रेज कभी समा नहीं पाये राज्य मे। अलौकिक शक्ति पीठ है सरायकेला का पब्लिक दुर्गा मंदिर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची ,1620ई से स्थापित एक उत्कलीय देशी रियासत जो अपनी शक्ति पीठों के लिए भी जानी जानी है, उसकी शारदीय 16 पूजा के अन्तिम पांच दिन में आज षष्टी तिथि को राजमहल प्रांगण स्थित पब्लिक दुर्गा पूजा हेतु मृणमयी मूर्ति एवं पूजा का राजा सरायकेला प्रताप आदित्य सिंहदेव एवं रानी अरुणिमा सिंहदेव ने विधिवत उद्घाटन किया । यह वही स्थानीय युद्ध की देवी दुर्गा है जिनके प्रताप में यहां कभी मुगल, मराठा व अंग्रेज घुस नही पाये । जिसकी सेनाएं उत्तर कलिंग माटी में राज किया करती रही । जिसे ओडिशा में पाईक तो सरायकेला मे गहोदल कहते थे ।

आज भी यह देवी अपनी प्रत्यक्ष रूप में विद्यमान है , मजाल है कोई इसे अनदेखी कर दे मंत्री हो या मुख्यमंत्री अगर नाटकबाजी हुई तो फल भोगना निश्चित है । इस देवी के अनेक सच्ची घटनाएं , चमत्कार आज भी परिलक्षित है । इतना ही नहीं इसकी उत्कलीय पाईक सेनाएं जिसे स्थानीय भाषा में गोहदल कहते थे इनका अपना एक स्थान था उत्कल से लेकर सरायकेला में ।

पहले यह मंदिर एक साधारण मंडप का स्वरूप था पर सरायकेला वासी एवं राजा द्वारा इसे एक भव्य मंदिर का रूप हाल ही में दिया गया। । सरायकेला मे अनेक पूजन स्थान विगत कुछ वर्षों में नजर आ रहे हैं पर यहां की पूजा में अपार भीड़ देखी जाती है । जो उत्कलीय परंपरा अनुसार तांत्रिक मत से होता है, जो पुरी की विमला आदि रियासती देवियों में प्रचलित है । इस अवसर पर गोलक बिहारी पति, पप्पू सामंत, बबि सिहदेव, पिंकू मोहान्ती , पूजा नीलकंठ षाड़ंगी आदि उपस्थित थे ।

सड़क हादसों को रोकने की विशेष तैयारी, लापरवाह चालकों पर ट्रैफिक पुलिस की नजर

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: राजधानी भुवनेश्वर में सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए ट्रैफिक पुलिस ने विशेष तैयारी शुरू कर दी है। शहर में लगातार हो रही सड़क दुर्घटनाओं को लेकर चिंता बढ़ रही है। त्योहारों के दौरान यातायात व्यवस्था सुचारु बनाए रखने और भीड़ को नियंत्रित करने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। राजधानी में दुर्घटनाओं को रोकने के लिए ट्रैफिक पुलिस ने व्यापक इंतजाम किए हैं। यातायात नियंत्रण के लिए 73 अधिकारियों और 15 प्लाटून पुलिस बल को तैनात किया जाएगा। इसके साथ ही सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से जनजागरूकता अभियान और वाहनों की जांच भी शुरू



कर दी गई है। यह अभियान आगे भी जारी रहेगा। ट्रैफिक एसीपी उमाकांत प्रधान ने वाहन चालकों से शराब पीकर गाड़ी नहीं चलाने और तेज रफ्तार से वाहन चलाने से बचने की अपील की है। त्योहारों के दौरान भीड़ को नियंत्रित करने के साथ-साथ लोगों की आवाजाही सुगम बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। शराब पीकर वाहन चलाने वाले और लापरवाही से गाड़ी चलाने वाले चालकों पर ट्रैफिक पुलिस की विशेष नजर रहेगी।

परम्परागत गरबे और गीत संगीत गायन में भारतीय संस्कृति की झलक

परिवहन विशेष न्यूज

इन्दौर में: कनकेश्वरी देवी पांडाल में परम्परागत गरबे और भक्ति आराधना जारी है। इसमें बालिकाओं द्वारा भारतीय संस्कृति व सभ्यता का परिचय भी दिखाई दे रहा है। गरबा नृत्य और गीत-संगीत गायन में भी पूर्ण रूप से अच्छा आयोजन किया जा रहा है। परम पूज्यनीय मां कनकेश्वरी देवी की उपस्थिति गरिमा पूर्ण रहती है।

फोटो जर्नलिस्ट निखिल चौहान





ईस्ट कोस्ट रेलवे का स्वच्छता अभियान जारी, ई-कचरे के उचित निपटान पर विशेष जोर

मनोरंजन सामल, स्टेट हेड, ओडिशा

भुवनेश्वर: ईस्ट कोस्ट रेलवे स्वच्छता पखवाड़ा-2026 और विशेष अभियान 6.0 के तहत स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन की दिशा में अपने प्रयासों को और मजबूत कर रहा है। इस अभियान के तहत इलेक्ट्रॉनिक कचरे (ई-वेस्ट) के उचित निपटान, पुराने कचरे की सफाई और रेलवे परिसरों को स्वच्छ बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण और जनभागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चलाया जा रहा यह अभियान 31 अक्टूबर 2026 तक ईस्ट कोस्ट रेलवे के अधिकार क्षेत्र में जारी रहेगा। स्वच्छता अभियान के तहत कार्यालय परिसरों में ई-कचरे और पुरानी फाइलों के निपटान पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसका उद्देश्य बेकार हो चुके इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और अप्रचलित दस्तावेजों का जिम्मेदारीपूर्वक निपटान सुनिश्चित करना, कार्यस्थलों की स्वच्छता में सुधार करना तथा बेहतर कचरा प्रबंधन पद्धतियों को बढ़ावा देना है। इसके साथ ही कार्यालय परिसरों की मशीनीकृत सफाई तथा रेलवे ट्रैक के किनारे जमा कचरे और लंबे समय से पड़े अपशिष्ट को हटाने का कार्य भी किया जा रहा है।



नई पीढ़ी में स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए बच्चों के बीच प्रश्नोत्तरी, चित्रकला एवं पेंटिंग प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया है।

इसी बीच, चल रहे स्वच्छता अभियान 6.0 के तहत रायगड़ा, बलांगीर, बरपाली और टिटलागढ़ रेलवे स्टेशनों पर 'रेल जन संवाद' (यात्री संपर्क कार्यक्रम) आयोजित किया गया। इसमें यात्रियों और आम लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस कार्यक्रम के माध्यम से यात्रियों को रेलवे अधिकारियों के साथ सीधे संवाद करने तथा स्टेशन की सुविधाओं, ट्रेनों में स्वच्छता और रेलवे सेवाओं से संबंधित अपने अनुभव, सुझाव एवं विचार साझा करने का अवसर मिला। यात्रियों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और यात्री संतुष्टि बढ़ाने के प्रयासों को और मजबूत किया जाएगा। इन पहलों के माध्यम से ईस्ट कोस्ट रेलवे जिम्मेदार कचरा प्रबंधन को बढ़ावा देने, रेलवे परिसरों में स्वच्छता का स्तर बेहतर बनाने और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमारे जीवन में बुजुर्ग महत्वपूर्ण मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं

राजकीय सह-शिक्षा माध्यमिक विद्यालय, खिचड़ीपुर गाँव में दादा-दादी एवं नाना-नानी दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया

नई दिल्ली, 09 अक्टूबर :राजकीय सह-शिक्षा माध्यमिक विद्यालय, खिचड़ीपुर गाँव, पूर्वी दिल्ली में गुरुवार को दादा-दादी एवं नाना-नानी दिवस बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों, उनके दादा-दादी, नाना-नानी, शिक्षकों और अभिभावकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

विद्यालय परिसर को रंग-बिरंगे गुब्बारों, पोस्टरों और बच्चों की कलाकृतियों से सजाया गया था। पूरा वातावरण उत्सवमय नजर आ रहा था।

कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करके की गई। इसके बाद बच्चों ने गीत, नृत्य, कविताओं और छोटी-छोटी नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने बुजुर्गों के प्रति प्रेम और सम्मान व्यक्त किया। कई बच्चों ने मंच पर आकर अपने दादा-दादी और नाना-नानी के साथ जुड़ी विशेष यादें साझा कीं, जिन्हें सुनकर उपस्थित लोग भावुक हो गए।

इस दौरान बच्चों ने अपने दादा-दादी और नाना-नानी के साथ विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों और बुजुर्गों ने एक-दूसरे के साथ खुशनुमा पल बिताए। इस अवसर पर बुजुर्गों को सम्मानित भी किया गया और उन्हें पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम ने बच्चों और बुजुर्गों के बीच प्यार और सम्मान के बंधन को और भी मजबूत किया।



विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती अनुराधा बरुआ ने अपने संबोधन में कहा कि दादा-दादी और नाना-नानी हमारे जीवन में मार्गदर्शक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके अनुभव और स्नेह बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में अहम योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों में अपने बुजुर्गों के प्रति आदर, अपनापन और जुड़ाव की भावना को मजबूत करते हैं।

कार्यक्रम में जिला समन्वयक डॉ. अंजू पाल और क्लस्टर समन्वयक डॉ. सपना भार्गव ने भी विद्यालय की इस पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में ऐसे आयोजन परिवारों को एक साथ लाने और विभिन्न पीढ़ियों के बीच संवाद बढ़ाने का अच्छा माध्यम हैं।

कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों ने बुजुर्गों को छोटे-छोटे उपहार और धन्यवाद कार्ड देकर उनका सम्मान किया। इस आयोजन ने सभी के चेहरों पर मुस्कान बिखेर दी और यह संदेश दिया कि हमारे जीवन में दादा-दादी एवं नाना-नानी का स्थान हमेशा विशेष रहेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023